हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक
लखनऊ

मई, 2019 वर्ष 18 अंक 03

सम्पादक
डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी
सहायक
मु0 गुफ़रान नदवी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग,
लखनऊ – 226007
फोन : 0522–2740406
E-mail : tameer1963@gmail.com
nadwa@bsnl.in

सहयोग राशि

एक प्रति	₹ 30/-
वार्षिक	₹ 300/-
विदेशों में (वार्षिक) 50 यु.एस. डॉलर	

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें
"सच्चा राही"
पता
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग
लखनऊ–226007

सच्चा राही
A/c. No. 10863759642 (Current A/c.)
IFS Code: SBIN0000125
Swift Code: SBINNB157
State Bank of India,
Main Branch, Lucknow.
कृप्या पैसा जमा करने के बाद दफ़्तर के फोन नं0 0522–2740406 अथवा ईमेलः **tameer1963@gmail.com** पर खरीदारी नम्बर के साथ अवश्य सूचित करें।

रोज़े से हो याद ये रखो

रमज़ान महीना आया है
ख़ैरो बरकत लाया है
सहरी खाओ रोज़ा रखो
रोज़े से हो याद ये रखो
गुस्सा गर्मी मत दिखलाओ
किसी को भी दुख मत पहुंचाओ
अदा जमाअ़त से हो नमाज़
दुआ भी मांगें बादे नमाज़
करो तिलावत रोज़ ज़रूर
नमाज़े तरावीह पढ़ो ज़रूर
सलामों रहमत नबी पे या रब
उनके आल, अस्हाब पे या रब

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा ख़त्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। आप अपना पैसा दिये गये बैंक खाते में भी जमा कर सकते हैं। अथवा मनीआर्डर से भी भेज सकते हैं। मनीआर्डर के कूपन पर अपना खरीदारी नम्बर के साथ मोबाइल नम्बर अवश्य लिखें।

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।
Designing & Editing by: Qamaruzzama-9452295052

विषय एक दृष्टि में

क़ुर्आन की शिक्षा	मौ0 बिलाल अब्दुल ह़यी हसनी नदवी	05
प्यारे नबी की प्यारी बातें	अमतुल्लाह तस्नीम	07
रमज़ान का मुबारक महीना	डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी	08
इस्लाम के तीन बुन्यादी अक़ायद	हज़रत मौ0 अबुल हसन अली नदवी रह0	10
आदर्श शासक	मौलाना अब्दुस्सलाम क़िदवाई नदवी	13
वास्तविक सफलता	मौलाना डॉ0 सईदुर्रहमान आज़मी नदवी	14
लैलतुल–क़द्र	सईदा सिद्दीक़ीया फ़ाज़िला	16
मौलाना मु0 वाजेह रशीद	हज़रत मौ0 सै0 मुहम्मद राबे हसनी नदवी	18
कुछ यादें कुछ बातें अब्बा की	मौलाना मुहम्मद अमीन हसनी नदवी	20
आपके प्रश्नों के उत्तर	मुफ़्ती ज़फ़र आलम नदवी	26
मानव अधिकार दिवस	मौलाना सै0 मु0 वाजेह रशीद हसनी नदवी	29
अल्लाह रब्बुल आलमीन	हज़रत मौ0 हक़ीम अब्दुल हयी हसनी रह0	31
अल्लाह अल्लाह किया करो (पद्य)	ताबिश महदी	35
मौलाना वाज़ेह रशीद हसनी रह0	इदारा	37
अहले खैर हज़रात	इदारा	38
अपील बराए तामीर	इदारा	41
उर्दू सीखिए	इदारा	42

क़ुरआन की शिक्षा

–मौलाना बिलाल अ़ब्दुल ह़यी हसनी नदवी

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

सूर-ए-माइदाः

अनुवाद–

ईसा पुत्र मरियम ने दुआ की ऐ अल्लाह हम पर आसमान से भरा दस्तरख़्वान उतार दे कि वह हमारे अगलों पिछलों की ईद हो जाए और तेरी एक निशानी हो और तू हमें रोज़ी प्रदान कर दे बेशक तू सबसे बेहतर रोज़ी देने वाला है(114) अल्लाह ने कहा कि मैं उसको तुम पर ज़रूर उतार दूंगा लेकिन फिर बाद में जो भी तुम में इनकार करने वाले होंगे तो मैं उनको ऐसा अज़ाब (दण्ड) दूंगा कि दुन्या में ऐसा अज़ाब मैं किसी को न दूंगा[1](115) और जब अल्लाह कहेगा ऐ ईसा पुत्र मरियम क्या तुम ने लोगों से कहा था कि मुझे और मेरी मां को अल्लाह के अलावा माबूद (पूज्य) बना लो[2] वे कहेंगे तेरी ज़ात पाक है यह मुझ से नहीं हो सकता कि मैं वह बात कहूं जिसका मुझे कोई हक नहीं और अगर मैंने यह बात कही होती तो वह तेरी जानकारी में होती, जो भी मेरे मन में है उससे तू अवगत है और तेरे मन में जो भी है वह मैं नहीं जानता बेशक तू ढके छिपे को ख़ूब जानता है(116) मैंने उनसे तो वही कहा था जो तूने मुझे आदेश किया कि अल्लाह की बन्दगी करो जो मेरा भी पालनहार है तुम्हारा भी पालनहार है और जब तक मैं उनमें रहा उन पर गवाह रहा और जब तूने मुझे उठाया तो तू ही उनकी निगरानी करने वाला रहा और तू हर चीज़ पर गवाह है(117) अगर तू उनको अज़ाब देता है तो वह तेरे बन्दे हैं और अगर तू उनको माफ़ कर देता है तो तू ही ज़बरदस्त है हिकमत वाला है(118) अल्लाह कहेगा यह वह दिन है कि जिसमें सच्चों को उनकी सच्चाई फायदा पहुंचाएगी, उनके लिए जन्नतें हैं जिनके नीचे से नहरें जारी हैं, हमेशा के लिए वे उसी में रह पड़ेंगे, अल्लाह उनसे राज़ी हुआ और वे अल्लाह से राज़ी हुए, यही वह बड़ी सफलता है[3](119) आसमानों और ज़मीन और उनमें जो कुछ है उसकी बादशाही अल्लाह के लिए है और वह हर चीज़ की पूरी सामर्थ्य (कुदरत) रखने वाला है(120)

तफ़्सीर (व्याख्या):–

1. कहा जाता है कि वह दस्तरख़्वान रविवार को उतरा और वह दिन ईसाईयों में इबादत का है लेकिन उन्होंने इसमें अल्लाह के आदेशों का

खयाल नहीं किया तो अज़ाब के अधिकारी बने पिछली आयतों में अल्लाह तआला ने हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पर और उनकी मां पर अपने उपकारों का उल्लेख किया है।

2. पिछला रुकूअ़ वास्तव में इस रुकूअ़ की भूमिका थी, पिछले रुकुअ़ के आरम्भ में पैग़म्बरों से उनकी उम्मतों के बारे में सवाल का उल्लेख था, यह विशेष रूप से हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम से सवाल का उल्लेख है जिनको लोगों ने खुदाई का दर्जा दे रखा है, पहले उन पर अल्लाह तआला उपकारों को बताएगा फिर सवाल होगा कि क्या तुमने कहा था कि हम को और हमारी माँ को भी अल्लाह के अलावा माबूद बना लो हज़रत मसीह इस सवाल कर कांप उठेंगे और वे कहेंगे जो आगे आयतों में उल्लेखित है, यह सब कयामत में पेश आएगा जिसे निश्चित होने की वजह से भूतकाल वाले वाक्य में व्यक्त किया गया है।

3. अल्लाह की रज़ामन्दी उनको इस तरह मिलेगी कि उनके दिल खुश हो जाएंगे और खिल जाएंगे। उनकी हर इच्छा ऐसे पूरी होगी कि कोई इच्छा बाक़ी नहीं रहेगी।

*****

सूर-ए-अनआम:

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान बहुत ही दयालू है।

अनुवाद–

प्रशंसा सब अल्लाह के लिए है जिसने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया और अंधेरों को और रौशनी को बनाया फिर यह इनकार करने वाले (दूसरों को) अपने पालनहार के बराबर ठहराते हैं[(1)] (1) वही है जिसने तुम को मिट्टी से पैदा किया फिर एक अवधि निश्चित की और एक निश्चित अवधि (उसकी जानकारी में) है फिर भी तुम शक में पड़ते हो[(2)] (2) वही अल्लाह है आसमानों और ज़मीन में तुम्हारे छिपे और खुले को जानता है और तुम्हारे किए धरे से भी अवगत है (3) और जब भी उनके पालनहार की निशानियों में से कोई निशानी उनके पास आती है तो वे मुंह ही फेर लेते हैं (4) बस हक़ जब उनके पास आया तो उन्होंने झुठला ही दिया तो जल्द ही उनके पास वह खबरें भी आ जाएंगी जिनका वे मज़ाक बनाते रहे हैं (5) क्या उन्होंने नहीं देखा कि उनसे पहले हमने कितने ऐसे सम्प्रदायों को समाप्त कर दिया जिनको हमने ज़मीन में वह पकड़ प्रदान की थी जो पकड़ हमने तुम्हें भी नहीं दी और हमने उन पर आसमान से मूसलाधार बारिश बरसाई थी और उनके नीचे से जारी नहरें बनाई थीं फिर उनके गुनाहों के कारण हमने उनको नष्ट कर दिया और उनके बाद हमने दूसरे वंशों को खड़ा कर दिया[(3)] (6) और अगर हम आप पर कागज़ पर लिख कर भी उतारें फिर वे अपने हाथों

शेष पृष्ठ...12 पर

प्यारे नबी की प्यारी बातें

रमजान की फजीलत

–अमतुल्लाह तस्नीम

रमजान की फजीलतः–

कुर्आन मजीद की आयतों में अल्लाह तआला इरशाद फरमाते हैं–

अनुवाद– ऐ ईमान वालो तुम पर रोज़े फर्ज किये गये जैसे तुम से अगलों पर फर्ज किये गये ताकि तुम परहेजगार बनो (सूरः बकरा)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया रमजान का चांद देख कर रोजा रखो और शव्वाल का चांद देख कर इफतार करो, और अगर बादल वगैरह से चांद नज़र न आये तो शाबान के तीस दिन पूरे करो।

(बुखारी–मुस्लिम)

चाँद देखने का बयानः–

हज़रत तलहा बिन उबैदुल्लाह से रिवायत है कि नबी सल्ल0 चांद देख कर जबान मुबारक से यह इरशाद फरमाते थे दुआ का तर्जुमा–

ऐ अल्लाह तू इसको हम पर अमन व ईमान और सलामती व इस्लाम के साथ निकाल मेरा मालिक और तेरा मालिक अल्लाह है यह चाँद बेहतरी और भलाई का हो। (तिर्मिजी)

सेहरी का बयानः–

हज़रत अनस रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया सेहरी खाया करो, सेहरी में बरकत होती है।

(बुखारी–मुस्लिम)

हजरत जैद बिन साबित रज़ि0 से रिवायत है कि हम ने रसूलुल्लाह सल्ल0 के साथ सहरी खाई फिर हम फज्र की नमाज के लिए चले, किसी ने पूछा कि सेहरी और नमाज़ के मध्य कितना अंतराल था, कहा पचास आयतों के पढ़ने के बकद्र फर्क था।

(बुखारी–मुस्लिम)

हज़रत अम्र बिन आस से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया हमारे रोजे को अहले किताब के रोज़ों पर जो फजीलत है वह सेहरी की वजह से है। (मुस्लिम)

इफतार का समयः–

हज़रत उमर बिन खत्ताब रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जब रात इधर आये और दिन उधर जाये और सूरज गुरूब हो जाये तो रोज़े के इफतार का समय आ गया।

(बुखारी–मुस्लिम)

इफतार में जल्दी करनाः–

हज़रत सहल बिन सअद से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया लोग उस समय तक भलाई में रहेंगे जब तक इफतार में जल्दी करेंगे। (मुस्लिम)

शेष पृष्ठ...09 पर

रमज़ान का मुबारक महीना आ गया

—डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी

प्रिय पाठको! रमज़ान के मुबारक महीने की आमद (आगमन) पर हमारा सच्चा राही का स्टाफ आप सब को दिली मुबारकबाद (हार्दिक बधाई) पेश करता है अल्लाह तआ़ला ने इस मुबारक महीने के विषय में पवित्र कुर्आन में हम को इस प्रकार सूचित किया हैः—

भावार्थः–

''रमज़ान का महीना वह महीना है जिसमें कुर्आन उतारा गया कुर्आन का गुण यह है कि वह लोगों के लिए पथ प्रदर्शक है और उसमें हिदायत की साफ और वाज़ेह और हक़ से बातिल को जुदा करने वाले दलाइल का मजमूआ़ है अर्थात वह सत्य को असत्य से अलग करने वाले तर्कों का संग्रह है, जो शख़्स तुम में से इस महीने को पाये उसको चाहिए कि इस महीने के रोज़े रखे, और जो शख़्स बीमार हो (और बीमारी की वजह से रोज़े न रख सके) या सफर पर हो (और सफर की वजह से रोज़े न रख सके) तो उसके ज़िम्मे दूसरे दिनों में (छूटे हुए रोज़ों की) गिनती को पूरा करना है, अल्लाह तआला को तुम्हारे लिए आसानी मंजूर है और उसको तुम्हारे लिए दुशवारी (कठिनाई) मन्जूर नहीं, यह सरलता इस लिए दी गयी ताकि तुम (छूटे हुए रोज़ों के बदले में रोज़ा रख कर) गिन्ती को पूरा कर लिया करो और ताकि उस एहसान पर कि खुदा ने तुम को सहीह तरीक़ा बता दिया उसकी बुजुर्गी (महान्ता) बयान किया करो और ताकि तुम शुक्र बजा लाओ''।

(अल बकरः आयत—185)

प्रिय पाठको! हम को उम्मीद है कि आप सब लोग रोज़ा रखते होंगे आप से अनुरोध है कि अगर किसी भाई में कोताही देखें तो समझा बुझा कर रोज़ा रखने पर प्रेरित करें। रमज़ान में हर नेकी का सवाब सत्तर गुना बढ़ा दिया जाता है। इसलिए आप सब इस महीने में नेकियां बढ़ा कर खूब सवाब हासिल करें, नमाज़ की पाबन्दी तो हमेशा ही करनी चाहिए मगर रमज़ान में और एहतिमाम करें कोशिश करें कि हर फर्ज़ नमाज़ जमाअ़त से अदा हो, तरावीह़ की नमाज़ बीस रकअ़त जमाअ़त के साथ अदा करने की कोशिश करें अगर किसी वजह से जमाअ़त छूट जाए तो अकेले बीस रकअ़त तरावीह पढ़ लें, घर की औरतों को भी प्रेरित करें कि वह तरावीह की नमाज़ पढ़ लिया करें।

प्रिय पाठको! कुर्आन मजीद रमज़ान में उतरा है इसलिए इसका रमज़ान से बड़ा गहरा सम्बन्ध है हम सबको चाहिए कि रमज़ान में जितना अधिक कुर्आन पढ़ सकें पढ़ें जिन भाईयों को कुर्आन मजीद पढ़ना ना

आता हो उनको समझायें कि उनको जो छोटी छोटी सूरतें याद हैं उनको बार बार पढ़ें और सवाब लें खूब दुआएं करें और दुरूद व सलाम पढ़ने का भी एहतिमाम करें। अल्लाह तआला जिस भाई को तौफीक़ दे वह रमज़ान के आख़िरी अशरे में मस्जिद में एतिकाफ करे और अगर एतिकाफ न कर सके तो आख़िरी अशरे की ताक़ रातों में जाग कर इबादत करे और खूब दुआएं मांगे ऐसा करने से उम्मीद है कि लयलतुल क़द्र में इबादत मिल जाए।

जिसको अल्लाह ने माल दिया हो वह अपने माल की ज़कात से और मज़ीद ख़ैरात से ग़रीबों बेसहारा बेवाओं और यतीमों नीज़ दीनी मदरसों की दिल खोल कर मदद करें। तमाम पाठकों से अनुरोध है कि वह अपने सम्पादक तथा सच्चा राही के स्टाफ के लिए भी दुआएं करें।

❖❖❖

प्यारे नबी की प्यारी.........

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया अल्लाह तआला को वह बन्दे बहुत महबूब हैं जो इफतार में जल्दी करते हैं।

(तिर्मिजी)

खजूर से इफ़्तारः–

हज़रत सलमान बिन आमिर जिब्बी सहाबी रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया खजूर से इफतार करो अगर खजूर न मिले तो पानी से रोजा खोलो, पानी सब को पाक करने वाला है।

(अबूदाऊद–तिर्मिजी)

खजूर और छुहारा न हो तो पानीः–

हज़रत अनस रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नमाज़ से पहले इफतार कर लेते थे और ताज़े खजूर से इफतार फरमाते थे, अगर ताज़े खजूर न मिलते तो खुश्क यानी छोहारे से रोज़ा खोलते थे और अगर यह भी न हो तो चंद घूंट पानी से रोज़ा इफतार फरमाते थे।

(अबू दाऊद–तिर्मिजी)

रोज़ेदार को ज़बान की हिफाज़त का आदेशः–

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया रोजेदार को चाहिए कि रोजे के दिन बेहयाई का काम न करे, न शोर करे और अगर कोई उसको गाली दे या लड़ना चाहे तो कह दे कि मैं रोजेदार हूं।

(बुखारी–मुस्लिम)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जिस आदमी ने झूठ बोलना और झूठी बात पर अमल करना न छोड़ा तो उसके खाना पानी छोड़ने की अल्लाह को कोई ज़रूरत नहीं। (बुखारी)

❖❖❖

–प्रस्तुति–
जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी

–पिछले अंक से आगे

इस्लाम के तीन बुन्यादी अक़ायद

–हज़रत मौलाना अबुल हसन अली नदवी (रह0) – अनुवादकः मुहम्मद हसन अंसारी

रिसालत (दूतता)

नबियों का सम्मान और उनसे प्रेमः–

पवित्र कुर्आन नबियों के लिए उस सम्मान और प्रतिष्ठा की मांग करता है जो दिल की गहराइयों से पैदा हो और उनसे भावनात्मक लगाव तथा प्रेम पैदा करना चाहता है। और केवल उनकी उस इताअत (आज्ञापालन) पर राज़ी नहीं जो भावना, महब्बत और आदर से खाली हो, जैसे कि प्रजा का बादशाह के साथ, और दूसरे फौजी व सियासी लीडरों के साथ जनता का एक औपचारिक संबंध होता है। कुर्आन मोमिन से ज़कात व सदक़ात (इस्लामी दान) के केवल कर्तव्यों का निर्वाह और आदेशों के नियम क़ानून की तालीम को काफ़ी नहीं समझता बल्कि उसकी मांग यह भी हैः–

अनुवादः–*ताकि तुम लोग अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाओ, और उनकी मदद करो। और उनका आदर करो। (सूरःअल–फ़्तह 9)*

अनुवादः– *जो उस रसूल पर ईमान लाए और जिन्होंने उसकी मदद की।*

(सूरः अल्–अअ्राफ 157)

इसलिए उसने हर उस चीज़ का हुक्म दिया जिसमें उनकी इज़्ज़त व सम्मान की रक्षा होती हो, और हर उस चीज़ से मना किया जिससे उनकी अनादरता होती हो और जिससे उनकी इज़्ज़त पर आँच आती हो, उनकी शान घटती हो और उनकी बड़ाई कम होती हो।

अनुवादः– *ऐ ईमान वालो! अपनी आवाज़ नबी की आवाज़ से ऊँची न करो और न उससे इस तरह ऊँची आवाज़ से बोलो जिस तरह आपस में बोलते हो, कहीं ऐसा न हो कि तुम्हारे कर्म बर्बाद हो जाएं और तुम्हें ख़बर भी न हो, जो लोग अल्लाह के रसूल के पास अपनी आवाज़ों को नीची करते हैं, वे लोग हैं जिनके दिलों को अल्लाह ने परहेज़गारी के लिए जाँच लिया है, उसके लिए माफ़ी और बड़ा बदला है।*

(सूरः अल्हुजुरात 2–3)

अनुवादः– *(मोमिनो! रसूल के बुलाने को तुम आपस में एक दूसरे को बुलाने की तरह न बनाओ। (सूरः अं–नूर 63)*

इसीलिए नबी के निधन के बाद उम्मत पर उनकी बीबियां हराम कर दी गयीं।

अनुवादः– *तुम्हें इसकी इज़ाजत नहीं कि तुम रसूल को तकलीफ पहुंचाओ और न यह जायज़ है कि उनके बाद भी कभी तुम उनकी पत्नियों से निकाह करो, बेशक यह अल्लाह के नज़दीक बड़ी गम्भीर बात है।*

(सूरः अल् अहजाब 53)

इसके अलावा बहुत से आदेशों में रसूल की महब्बत, और अपनी जान, माल आल–औलाद के मुकाबले पर वरीयता की मांग की गयी है। बुख़ारी व मुस्लिम में है।

''तुममें से कोई मोमिन नहीं हो सकता जब तक कि मैं उसके लिए उसके बाप, उसके लड़के और तमाम लोगों की तुलना में अधिक प्रिय न हो जाऊँ।''

तिबरानी मोजम कबीर (किताब का नाम) और औसत (किताब का नाम) में 'मिन नफ़्सिहि' भी है, अर्थात अपनी जान से भी अधिक प्रिय हों।

और इसी प्रकार कहाः-

जिसमें तीन बातें हों उसने ईमान की मिठास पा ली, एक वह जिसके लिए अल्लाह तथा उसका रसूल दूसरे से बढ़ कर प्रिय हो!

यहां इस बात को स्पष्ट कर देना जरूरी है कि नबी जिनके सरदार हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं, का मख़लूक से और उन क़ौमों से जिनकी तरफ वह भेजे जाते हैं पोस्टमैंन और डाकियों जैसा तअल्लुक़ नहीं होता, जिसकी ज़िम्मेदारी सिर्फ यह है कि वह डाक जिसकी हो उस तक पहुंचा दे, फिर उसे उन लोगों से कोई सरोकार नहीं। और इन लोगों को उस मध्यस्त और डाकिये से कोई मतलब नहीं वह अपने कामों और अधिकारों में बिल्कुल आज़ाद है।

और उन क़ौमों का तअल्लुक़ जिनके बीच नबी आये, अपने नबी से महज सामाजिक व क़ानूनी होता है, उनको उनकी सीरत, तौर तरीका पसन्द नापसन्द और उनकी वैयक्तिक ज़िन्दगी और व्यक्तिगत ज़िन्दगी से कोई दिलचस्पी नहीं, यह वह गलत व आधारहीन और अधूरी कल्पना है जो उन क्षेत्रों में प्रचलित था जो नबूवत के बुलंद मक़ाम से नावाकिफ थे, और हमारे इस दौर में उन हल्कों में फैला हुआ है जो सुन्नत के मकाम से नावाकिफ़ और हदीस और उसकी हुज्जत (दलील) होने को नहीं मानते हैं और जिन पर मज़हब की ईसाइयों वाली सोच का असर और पश्चिमी चिन्तन शैली का वर्चस्व है।

इसके विपरीत वास्तविकता यह है कि नबी पूरी इन्सानियत के लिए परिपूर्ण पेशवा, उच्च अनुकरणीय नमूना, आचरण, अभिरुचि स्वीकारने व रद्द करने और निकटता व अलगाव के बारे में परिपूर्ण और अन्तिम नमूना होते हैं। उनके आचार-व्यवहार उनका रहन सहन सब खुदा की नज़र में प्रिय है। रहन सहन में उनका ढंग, इन्सानों के आचरण में उनके आचरण, लोगों की आदतों में उनकी आदतें अल्लाह के नज़दीक प्रिय बन जाती है। नबी जिस रास्ते को अपनाते हैं वह रास्ता खुदा के यहां प्रिय बन जाता है और उसको दूसरे रास्तों पर प्राथमिकता हासिल होती है, सिर्फ इस वजह से कि नबियों के कदम उस रास्ते पर पड़े हैं। उनकी तमाम पसन्दीदा चीज़ों, तौर तरीक़ों और उनसे सम्बन्ध रखने वाले कार्यों से अल्लाह की महब्बत और पसन्दीदगी जुड़ जाती है। उनको अपनाना और उनके आचरण

की झलक पैदा करना अल्लाह को राज़ी करने का निकट और अति सरल रास्ता हो जाता है, इसलिए कि दोस्त का दोस्त, दोस्त, और दुश्मन का दोस्त, दुश्मन समझा जाता है। अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़बान से कहलवाया गयाः–

अनुवादः– *कह दीजिए, "अगर तुम अल्लाह से महब्बत रखते हो, तो मेरी पैरवी (अनुसरण) करो, अल्लाह भी तुम को चाहने लगेगा, और तुम्हारे गुनाह माफ़ कर देगा, और अल्लाह बड़ा माफ़ करने वाला, कृपा वाला है।*

(सूरः आले–इमरान– 31)

इसके विपरीत जो जुल्म पर कमर बांधे हुए और कुफ्र की राह अपनाए हुए हैं उनकी तरफ दिल का झुकाव उनके रहन–सहन के ढंग की वरीयता और उन जैसा बनने की कोशिश, अल्लाह की गैरत को हरकत में लाने वाली और अल्लाह से बन्दे को दूर करने वाली बताई गयी है। फरमाया गयाः–

अनुवादः– *और उनकी ओर मत झुकना, जिन्होंने जुल्म किया, वरना आग तुम्हें आ लिपटेगी और अल्लाह के सिवा तुम्हारा कोई न दोस्त होगा और न तुम्हारी मदद ही की जायेगी।*

(सूरः हूद–113)

जारी..........

❖❖❖

कुर्आन की शिक्षा........

से छू भी लें तब भी इनकार करने वाले यही कहेंगे कि यह तो खुला हुआ जादू है[4](7) और वे कहते हैं कि उन पर फरिश्ता क्यों न उतरा और अगर हम फरिश्ता उतार देते तो फैसला ही हो जाता फिर उनको मोहलत भी न मिलती[5](8)

तफ़्सीर (व्याख्या)ः–

1. हर मुश्रिक (बहुदेववादी) क़ौम ने किसी न किसी को खुदाई साझीदार ठहराया यहूदियों ने हज़रत उज़ैर अलैहिस्सलाम को और ईसाईयों ने हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को खुदा का बेटा कहा।

2. आदम अलैहिस्सलाम को मिट्टी से बनाया फिर स्त्री व पुरुष के मिलाप से गर्भ धारण होता है इसकी उम्र अल्लाह के यहां निश्चित है मौत की जानकारी भी अल्लाह ही को है।

3. आद व समूद को कैसी शक्ति प्राप्त थी पत्थर तराशने में उनकी मिसाल नहीं थी लेकिन जब उन्होंने इनकार किया तो वे भी मिट्टी में मिला दिए गए।

4. मुश्रिक कहते थे कि कुरआन लिखा हुआ आए चार फरिश्ते साथ आएं तो हम मानेंगे, उसका जवाब है कि हिदायत जिनके भाग्य में नहीं वे छू कर भी देख लें तो जादू ही कहेंगे।

5. अल्लाह की रीति यही है कि मांगी हुई निशानी आने के बाद अगर कौम ईमान न लाए तो फिर मोहलत नहीं मिलती।

❖❖❖

–प्रस्तुति–

जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी

आदर्श शासक

—मौलाना अब्दुस्सलाम क़िदवाई नदवी रह0

—अनुवादः अतहर हुसैन

तीसरे ख़लीफ़ा
हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ि0 का वर्णन

लाभ कारक सौदाः—

हज़रत उस्मान रज़ि0 बहुत बड़े व्यापारी थे। ख़िलाफ़त का उत्तरदायित्व संभालने से पूर्व उनका व्यापार बहुत बड़े पैमाने पर फैला हुआ था और हज़ारों ऊँटों पर उनका व्यापारिक सामान आता—जाता था।

एक बार सीरिया देश से एक तिजारती कारवां आया। एक हज़ार ग़ल्ले से लदे हुए ऊँट जब मदीनाः मुनव्वराः पहुंचे तो सारे नगर में शोर मच गया। देश में इस साल वर्षा गत वर्षों के मुक़ाबले में बहुत कम हुई थी, जिसके कारण उपज बहुत कम हो गई थी। ऐसी दशा में ग़ल्ले से लदे हुए एक हज़ार ऊँट को मदीनः पहुंचना मामूली बात न थी। तत्काल यह ख़बर सारे शहर में फैल गई और ग्राहकों का तांता बंध गया। बीसियों व्यापारी हज़रत उस्मान रज़ि0 के पास आ गए और ग़ल्ला ख़रीदने की बातचीत करने लगे। बड़े—बड़े व्यापारियों ने अधिक से अधिक लाभ की पेशकश की और एक बारगी सम्पूर्ण धनराशि दे कर सारा गल्ला ख़रीदने का वादा किया। हज़रत उस्मान रज़ि0 कुछ देर तक ख़ामोशी से उनकी बातें सुनते रहे परन्तु उन लोगों ने जब बहुत आग्रह किया, तो आपने उनसे पूछा कि बताइये आप अधिक से अधिक कितना लाभ मुझे देने को तैयार हैं और मेरे क्रय—मूल्य पर कितनी वृद्धि कर सकते हैं? यह सुन कर प्रत्येक व्यापारी ने अपने अन्दाज़े के हिसाब से अलग—अलग दर बताई। किसी ने कहा, दस के बारह दूंगा, किसी ने कहा दस के चौदह दूंगा। अन्त में अधिक से अधिक मूल्य बताने वालों ने कहा कि हम पचास प्रतिशत लाभ देने को तैयार हैं। दस की लागत पर आप पन्द्रह ले लीजिए और माल हमारे हवाले कर दीजिए। उन लोगों की बातचीत सुनने के बाद हज़रत उस्मान रज़ि0 ने कहा, बस अब आप लोगों में इस से अधिक का सामर्थ्य नहीं। लोगों ने कहा नहीं साहब, अब इससे बढ़ कर कौन क़ीमत दे सकता है। आपने कहा, मगर मुझको इससे कहीं अधिक मुनाफ़ा मिल सकता है। एक सौदा करने वाला तो दस गुने लाभ पर सौदा कर रहा है और दस क्रय—मूल्य पर सौ विक्रय मूल्य देने को तैयार है, फिर क्या वजह है कि उसको छोड़ कर मैं तुमसे इतने कम पर सौदा करूं। तुम अधिक से अधिक पचास प्रतिशत लाभ देने पर तैयार हो लेकिन तुम्हारे मुक़ाबले

में वह हज़ार प्रतिशत देने को कहता है और दस ऊँट ग़ल्ले के बदले में सौ ऊँट ग़ल्ले की क़ीमत अदा करने को तैयार है। भला बताओ अब तुम्हारे साथ कैसे सौदा कर सकता हूं।

हज़रत उस्मान रज़ि0 की यह बात सुन कर उन व्यापारियों को बड़ा अचम्भा हुआ। उन्होंने कहा कि साहब यह तो असम्भव है, हम इतनी ज़ियादा क़ीमत कहां से दे सकते हैं। हज़रत उस्मान रज़ि0 ने कहा, अच्छा सुनो, मैं तुम्हें गवाह बनाता हूं और ऐलान करता हूं कि मैंने यह सारा ग़ल्ला मदीना मुनव्वरा के दीन दुखियों को दे दिया।

जन सेवा के इसी भाव ने उन्हें सब की निगाह में प्रिय बना दिया था। हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नज़र में प्रिय होने का हाल ऊपर बयान किया जा चुका है, अन्त तक उनके बारे में हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की यही हालत रही। हज़रत सिद्दीक़ रज़ि0 की मर्दुम–शिनासी जगत प्रसिद्ध है। वह भी हज़रत उस्मान रज़ि0 को बहुत पसन्द करते थे। यहां तक कि उनको ख़िलाफ़त के लिए उपयुक्त समझते थे। देहान्त के समय उनसे वसीयतनामा लिखवाने लगे कि भविष्य में ख़लीफ़ा कौन होगा। अभी बात पूरी न हुई थी कि बेहोश हो गए, हज़रत उस्मान रज़ि0 को मालूम था कि हज़रत सिद्दीक़ रज़ि0 अपने बाद हज़रत उमर रज़ि0 को ख़लीफ़ा नियुक्त करना चाहते हैं। इस बारे में पहले बात हो चुकी थी, अतः बेहोशी की दशा में उनका नाम लिख दिया। हज़रत सिद्दीक़ रज़ि0 जब होश में आए तो पूछा, क्या लिखा? हज़रत उस्मान रज़ि0 ने उत्तर दिया कि हज़रत उमर रज़ि0 का नाम लिख दिया। हज़रत सिद्दीक़ रज़ि0 ने पसन्द किया और कहा कि अगर तुम अपना नाम लिख देते तो तुम भी इस पद के योग्य थे।

फ़रूक़ी नज़रः–

हज़रत उमर रज़ि0 की जन सेवा का उल्लेख ऊपर किया जा चुका है। इस सिलसिले में अधिकारी की नियुक्ति की कार्य शौली का वर्णन भी किया जा चुका है। अफ़सरों को वह जनता का सेवक समझते थे। अगर ज़रा भी इस बारे में कोई कमी दिखाई देती थी तो वह अधिकारियों से कड़ी पूछ–ताछ करते थे। रियाया परवरी और जनसेवा की असाधारण भावना के बावजूद उन्होंने अपने वसीयतनामें में ख़िलाफ़त के उम्मीदवारों की जो सूची बनायी, उसमें हज़रत उस्मान रज़ि0 का नाम भी शामिल था।

हुक्काम की निगरानीः–

ख़लीफ़ा होने के बाद हज़रत उस्मान रज़ि0 ने इन आशाओं की पूर्ति कर दी। अधिकारियों को ताकीद करते थे कि रिआ़या के साथ दया तथा प्रेम–भाव से पेश आएं और इस बात की देख–रेख का भी प्रबन्ध था

कि अधिकारी इस आदेश का पूरे तौर पर पालन करते हैं कि नहीं। अधिकारियों को बराबर नसीहत करते रहते थे कि वह केवल तहसीलदार हो कर न रह जायें बल्कि करों की वसूलयाबी के साथ इसका ध्यान रखें कि रिआ़या को आराम पहुंचे। लगान आदि की वसूलयाबी के साथ इस बात की ओर विशेष ध्यान दें कि भूमि के सुधार तथा निर्माण की ओर से ढील न होने पावे। यात्रियों के लिए सड़कें, सरायं और कुएं बहुत से बनवाएं ताकि राहगीरों को कष्ट न हो।

स्वभाव में अति नम्रता थी। यदि कोई कड़े शब्दों में भी बात करता तब भी आप उसके उत्तर देने में नम्रता से काम लेते। अपने लिए किसी को भी कष्ट देना उचित न समझते थे। अपने काम स्वयं अपने हाथ से कर लेते थे।

शुक्रवार को नमाज़ से पहले एलान करते कि अगर किसी को कुछ कहना हो या किसी हाकिम की शिकायत करना हो, तो बेधड़क कहे। इसी तरह हर साल हज के समय अधिकारियों को तलब करते थे और फिर एलान कराते थे कि अगर किसी हाकिम से किसी भी व्यक्ति को कोई शिकायत हो, तो बेझिझक पेश करे। कहा करते थे कि मैं शक्तिशाली के मुकाबले में निर्बल के साथ हूँ।

भूमि सय्याः–

लोगों के साथ मिल–जुल कर रहते और बड़ी नम्रता से पेश आते ताकि उन्हें कुछ कहने में किसी प्रकार की झिझक न हो। दोपहर को मस्जिद में ही निवास करते, चादर सिर के नीचे रख लेते और फ़र्श पर लेट जाते। उठते तो शरीर पर कंकरियों के निशान बन जाते। किसी को कोई मसला पेश करना होता तो मस्जिद ही में आपके सामने अपनी शिकायत रख देता और आप वहीं फैसला कर देते।

अमीरी से ग़रीबीः–

ज़रूरतमन्द लोगों का आप विशेष ध्यान रखते थे। दान पुण्य की यह दशा थी कि ख़िलाफ़त से पूर्व केवल बकरियों और ऊँटों की इतनी बड़ी संख्या थी कि अरब देश में शायद ही किसी के पास हो, लेकिन बारह–तेरह वर्ष की ख़िलाफ़त में यह दशा हो गई कि सवारी के एक ऊँट के अलावा और कुछ पास न रहा। लोगों की आवश्यकताएं दिल खोल कर पूरी करते थे। क़र्ज़ देकर वापस न लेते थे। स्वयं मोटा–झोटा खा कर गुज़र बसर करते थे, परन्तु दूसरों को उत्तम भोजन कराते थे। इतिहासकारों ने स्पष्ट किया है कि– वह लोगों को अमीराना खाना खिलाते थे, फिर अपने घर में दाख़िल होते थे और रोटी के साथ सिरका तथा तेल खाते थे।

वस्त्र भी बहुत मामूली प्रयोग करते थे, बीवियों को भी उत्तम वस्त्र प्रयोग करने की मनाही थी।

लैलतुल-क़द्र (क़द्र की रात)

—सईदा सिद्दीक़ीया फ़ाज़िला

क़द्र का अर्थ है आदर, सम्मान इसलिए लैलतुल—क़द्र (क़द्र की रात) का अर्थ हुआ सम्मान वाली रात लेकिन यह रमज़ान की एक विशेष रात का नाम है इसलिए हम इसका अनुवाद न करके क़द्र की रात ही लिखेंगे। अल्लाह तआ़ला पवित्र कुर्आन में फ़रमाते हैं—

अनुवादः— *''बेशक हमने इस (कुर्आन) को क़द्र की रात में उतारा है, और क्या आप जानते हैं कि क़द्र की रात क्या है, क़द्र की रात हज़ार महीनों से बेहतर है इस रात में फ़िरिश्ते और रूह यानी हज़रत जिबरील अल्लाह के हुक्म से हर प्रकार के आदेश लेकर उतरते हैं, यह सलामती वाली रात है, फ़िरिश्ते मोमिन बन्दों के लिए सलामती की दुआ करते हैं यह सिलसिला सुब्ह होने तक जारी रहता है।''*

(सूरतुल—क़द्र पारह :30)

क़द्र की रात मुख़्तलिफ़ रिवायतों के मुताबिक़ रमज़ान के आखरी अशरे की किसी ताक़ रात में होती है वह ताक़ रातें यह हैं— 20—21 के बीच की रात 22—23 के बीच की रात, 24—25 की रात 26—27 के बीच की रात या 28—29 के बीच की रात।

यह रात हज़ार महीनों से बेहतर यानी जो शख़्स इस रात में इबादत करेगा उसको हज़ार ऐसे महीनों जिन में क़द्र की रात न हो, कि इबादत से ज़ियादा सवाब मिलेगा अल्लाह का कितना बड़ा इनआ़म है इस उम्मत के लिए, हम को चाहिए कि हम इस रात में इबादत का सवाब हासिल करें। यह सवाब हासिल करने के लिए रमज़ान के आखरी अशरे की ताक रातों में जाग कर इबादत करने की तरगीब आई है। इसलिए रात में कोई ख़ास इबादत नहीं है, तरावीह की नमाज़े तो पढ़ी ही जाती है उसके अलावा अल्लाह जितनी तौफीक़ दे नफ़्ल नमाज़ें पढ़ें ख़ास तौर से तहज्जुद की नमाज़ पढ़ें, तिलावत करें, खूब दुआ़यें मांगे, अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दुरूद व सलाम पढ़ें हदीस में इस रात में पढ़ने के लिए एक ख़ास दुआ मिलती है वह यह है ''अल्लाहुम्म इन्नक अ़फुवुन् तुहिब्बुल—अफ़्वा फ़अ़्फ अ़न्नी''

اَللّٰھُمَّ إِنَّکَ عَفُوٌّ تُحِبُّ الْعَفْوَ فَاعْفُ عَنِّیْ

नोटः जिस अक्षर पर हलन्त न हो उसको अकेले अक्षर की तरह ज़बर से पढ़ें, ज़बर के लिए आ की मात्रा लाना ग़लत है।

दुआ़ का अनुवादः ऐ अल्लाह बेशक आप मुआ़फ़ करने वाले हैं, मुआ़फ़ करने को पसन्द करते हैं, पस आप मुझको मुआ़फ़ कर दीजिए''।

कितने ख़ुश क़िस्मत (भाग्यवान) हैं वह लोग जो रमज़ान के आखिरी अशरे

की तमाम रातों में विशेष कर ताक़ रातों में जाग कर अल्लाह की इबादत करते हैं और क़द्र की रात की बरकत भी पा लेते हैं, वैसे जो लोग मर्द हों या औरतें नमाज़ के पाबन्द हैं रोज़े रखते हैं वह मग़रिब की नमाज़ पढ़ते हैं इशा की नमाज़ पढ़ते हैं, तरावीह की नमाज़ पढ़ते हैं, सहरी खा कर कुछ रकअ़ते पढ़ लेते हैं फ़ज्र की नमाज़ पढ़ते हैं मर्द लोग सब नमाज़ें जमाअ़त से पढ़ते हैं यह सब लोग भी क़द्र की रात की अच्छी खासी बरकतें पा लेते हैं।

हमारी जो माएं बहनें रमज़ान के आख़िरी अशरे में हैज व निफ़ास में मुबतला हो जाएं तो वह भी मायूस न हों वह नमाज़ व रोज़ा शरई हुक्म से छोड़ती हैं वह तिलावत नहीं कर सकती मगर कुर्आन व हदीस की दुआ़यें पढ सकती हैं अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दुरूद व सलाम पढ़ सकती हैं वह आख़री अशरे के लिए ताक़ रातों में जाग कर कुर्आन व हदीस की दुआएं पढ़ें अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दुरूद व सलाम पढ़ें अपनी ज़बान में दुआऐं मांगे, क़द्र की रात की ख़ास दुआ जो पीछे लिखी गई उसको खूब पढ़ें इन्शाअल्लाह वह क़द्र की रात की बरक़तों से महरूम न रहेंगी। बल्कि भरपूर सवाब पायेंगी। अल्लाह तआ़ला ने फरमाया कि इस कुर्आन को हमने क़द्र की रात में उतारा है, रिवायत से मालूम होता है कि अल्लाह तआला ने लौहे महफ़ूज़ से पूरा कुर्आन क़द्र की रात में आसमाने दुन्या पर उतारा फिर वहां से ज़रूरत के मुताबिक थोड़ा थोड़ा करके नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर हज़रत जिबरील के ज़रिये से उतरता रहा, पहली रात ग़ारे हिरा में सूरतुल अ़लक़ की पांच आयतें उतारीं फिर यह सिलसिला चलता रहा और 23 सालों में पूरा कुर्आन उतारा गया इस रात में फिरिश्ते और रुहुल अमीन जिबरील अलै0 ज़मीन पर उतरते हैं अल्लाह तआला उनको अपने बन्दों पर साल भर में जो होने वाला है उसकी ख़बर दे कर उतारता है कि किसको कितनी रोज़ी मिलेगी, किस को क्या बीमारी मिलेगी, किस को सिहत मिलेगी, किसके साथ क्या हादिसा पेश आएगा, किसको कब मौत आएगी वगैरह। फिरिश्ते यह सब मालूमात लेकर उतरते हैं और अल्लाह के नेक बन्दों के लिए सलामती की दुआएं करते हैं इसी लिए इसको सलामती वाली रात कहा गया है ये सिलसिला सुब्ह तक जारी रहता है अल्लाह तआला हम सब को इस रात की बरकात से नवाज़ें आख़िर में हम अल्लाह तआला से दुआ करते हैं कि ऐ अल्लाह अपने प्यारे नबी पर लाखों रहमतें और करोड़ों सलाम नाज़िल फरमा उन पर भी

शेष पृष्ठ...19 पर

मौलाना मु0 वाजेह रशीद हसनी रह0 ने एक वंश को तैयार किया

—हज़रत मौलाना मु0 राबे हसनी नदवी

मेरे हक़ीक़ी भाई मु0 वाजेह रशीद हसनी नदवी रह0 जिन का मुख्य विषय अरबी लिट्रेचर, इतिहास, मगरिबी तहजीब, फिक्रे इस्लामी, और मगरिबी आइडियोलॉजी था, उनकी अन्तर्राष्ट्रीय हालात पर बड़ी गहरी नज़र थी, वह इस मैदान से खूब वाकिफ थे, पाठक उनके लेखों से फायदा उठाते थे और उसकी खूब कदर करते थे, उनके जरिये एक नस्ल तैयार हुई, जिसने उनके मार्गदर्शन में सही इस्लामी फिक्र को आगे बढ़ाया।

उन्होंने इस्लामी बेदारी पैदा करने में बड़ा अहम किरदार अदा किया, और एक नस्ल को तैयार किया, उन्होंने इस्लामी तहरीकों और इस्लामी मकासिद को पेश किया, और मगरिबी चालबाजियों, साजिशों से पर्दा उठाया, और अपनी किताबों लेखों और शोधों और अपनी सही फिक्र के जरिये इस्लाम और मुसलमानों के खिलाफ अन्तर्राष्ट्रीय साजिशों का पर्दा फाश किया, लेकिन अल्लाह को कुछ और मंजूर था। एक मुख्तसर बीमारी के बाद यह मुसाफिर अपने मालिके हक़ीक़ी से जा मिला।

अनुवादः *ऐ वह जान जो (अल्लह की इताअ़त में) चैन पा चुकी है, अपने परवरदिगार की ओर इस तरह लौट कर आ जा की तू उससे राजी हुआ और वह तुझ से राजी, और शामिल हो जा मेरे (नेक) बंदों में, और दाखिल हो जा मेरी जन्नत में।*

(सूरः अल फज्रः 27–30)

उनकी वफात बहुत बड़ा नुकसान है, और उनसे फायदा उठाने वालों, उनकी सोच फिक्र और उनके लेखों से खूब फायदा उठाने वालों ने अपने लेखों व पत्रों के माध्यम से अपने जज़्बात का इजहार किया, उनकी वफात से उन लोगों का बड़ा नुकसान हुआ जो उनसे जुड़े थे और मेरा इसलिए कि वह मेरे हक़ीक़ी भाई थे, उनका मेरा तअल्लुक़ दिली भी था, इल्मी भी, जेहनी भी था, फिक्री भी।

मरहूम जहां एक आलिम व विचारक थे वहीं एक मुरब्बी (अभिभावक) भी थे एक अच्छे शिक्षक, एक अच्छे अदीब (साहित्यकार) एवं जेहन साज थे एक अच्छे विष्लेशक थे और इल्मी हल्कों में अपने ठोस विचारों और अपने कीमती विष्लेशणों की वजह से एक प्रसिद्ध सहाफी व एडीटर थे उनके जरिये से शिक्षा दीक्षा अख्बार नवेसी, फिक्री तहजीब और साहित्य एवं इतिहास का बहुत बड़ा फायदा महसूस हो रहा था कि अचानक उनकी वफात का समय आ गया जिस से पूरी इल्मी दुन्या उनके गम में डूब गई है।

"इन्नालिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन!

इन्शाअल्लाह इस पर्चे के माध्यम से उनकी इल्मी शख्शियत के अनेका अनेक

पहलुओं पर जो कुछ उनके कद्रदानों ने लिखा है वह सामने आयेगा। अल्लाह तआला उनको आख़िरत में इसका बड़ा बदला अता फरमाये, और उनके अजीज रिश्तेदारों और उनके साथियों को और उनके समस्त अनुयायियों को सब्रे जमील अता फरमाये, आमीन।

जमाल अहमद नदवी

❖❖❖

लैलतुल–क़द्र.........

और उनके सब असहाब पर भी कि उन्हीं के ज़रिये हम को इस्लाम मिला कुर्आन मिला और लैलतुल–क़द्र का इन्आ़म मिला।

एअ्‌तिकाफः–

रमज़ान के आखिरी अ़शरे का एअ्‌तिकाफ ऐसी सुन्नत है कि अगर बस्ती का या महल्ले का एक शख़्स कर ले तो सब की तरफ से यह सुन्नत अदा हो जायेगी लेकिन अगर कोई भी एअ़तिकाफ न करे तो बस्ती के सब लोगों पर यह सुन्नत छोड़ने का गुनाह होगा। एअ्‌तिकाफ ऐसी मस्जिद में करना चाहिए जिसमें पांचों वक़्त की नमाज़ जमाअत से होती हो, बीस रमज़ान की शाम को मगरिब से पहले एअ्‌तिकाफ़ की नियत से मस्जिद में दाखिल हो जायें और फिर ईद का चांद दिखने तक शरई ज़रूरतों के बगैर मस्जिद से न निकलें मस्जिद में ज़ियादा से ज़ियादा वक़्त इबादतों में गुज़ारें फर्ज़ नमाज़ों के सिवा नफ़्ल नमाज़ें पढ़ें तिलावत करें अल्लाह की तस्बीह पढ़ें अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दुरूद व सलाम पढ़ें दीन की बातें करें मस्जिद के जितने हिस्से में नमाज़ पढ़ी जाती है उसके बाहर निकलते ही एअ्‌तकाफ टूट जायेगा अल्बत्ता पाखाना पेशाब या फर्ज़ गुस्ल जैसी शरई जरूरतों के लिए बाहर निकल सकते हैं मगर जरूरत पूरी कर के फौरन मस्जिद में आ जायें। वुजु भी मस्जिद में इस तरह करें कि जिस्म मस्जिद में रहे और पानी मस्जिद के बाहर गिरे अगर ऐसा नज़्म न हो सके तो वुजू खाने में जा कर वुजु कर के फौरन मस्जिद में आ जायें कोई और मसअला पैदा हो तो किसी आलिम से पूछें या किताब में तलाश करें। एअ्‌तिकाफ से बड़ा सवाब हासिल होता है खास तौर से लैलतुल क़द्र में इबादत का ज़ियादा मौक़ा मिल जाता है। औरतें भी एअ्‌तिकाफ़ करके उस का सवाब हासलि कर सकती हैं। वह अपने घर में किसी गोशे को एअ्‌तिकाफ के लिए खास कर के उसी में एअ्‌तिकाफ करें और बीस रमज़ान की शाम को सूरज डूबने से पहले से ईद का चाँद दिखने तक शरई जरूरत के बगैर एअ्‌तिकाफ की जगह से बाहर न आयें। हैज़ और निफास की हालत में एअ्‌तिकाफ जाइज़ नहीं।

❖❖❖

कुछ यादें कुछ बातें अब्बा की

(अब्बा से मुराद हैं मौलाना मुहम्मद वाजेह रशीद हसनी नदवी रह0)

–मौलाना मुहम्मद अमीन हसनी नदवी

–हिन्दी लिपिः हुसैन अहमद

वह मेरे दादा थे और हम भाई बहन अपने दादा को अब्बा कहते थे, अब्बा की शख़्सीयत उनकी फ़िक्र, उनके उस्लूब, उनकी सहाफती ज़िन्दगी, उनकी अदबी खुसूसीयत और उनके इल्मी मुक़ाम व मरतबे पर लिखने वालों ने बहुत कुछ लिखा है और आइन्दा लिखते रहेंगे, मैं तो यहां पर उन की इंफिरादी ज़िन्दगी के उन पहलुओं को सामने लाना चाहूंगा जो हमारी उख़रवी ज़िन्दगी को बेहतर बना सकते हैं।

कुर्आन पाक के बारे में आता है जब अहले ईमान के सामने उनकी आयात तिलावत की जाती हैं तो उनका ईमान मज़ीद तरक़्क़ी करता है और उनका अपने रब पर भरोसा बढ़ता है। (देखिए सूरे अनफाल आयत नं02)

अब्बा की कुर्आन करीम से वाबस्तगी और उससे खास तअल्लुक़ जिसका मुशाहदा हमने उस वक्त किया जब हम हाफिज़ हुए और हमने पहली तरावीह मस्जिद दायरह शाह अ़लमुल्लाह रहमतुल्लाही अलैहि में सुनाई, हमने कुर्आन पाक का हिफ़्ज़ सफहात के ऐतिबार से किया था और सफहात के ऐतिबार से जब आदमी रुकूअ़ करता है तो कहीं कहीं बात अधूरी रह जाती है और मफ्हूम वाजेह नहीं हो पाता, यह चीज़ अब्बा समझते थे इसलिए तरावीह के मअन बाद हम को मुतनब्बह करते और फरमाया करते थे कि किसी ऐसे हाफिज़ को सुनाओ जो अरबी ज़बान से भी वाक़िफ हो, और सहीह मख़ारिज बल्कि तजवीद से भी कुछ न कुछ वाक़िफियत रखता हो जब तक अब्बा की आँख की बीनाई रही तब तक कुर्आन पाक का मामूल खुद पढ़ने का था, और कई कई पारे पढ़ने का था, लेकिन इधर कई सालों से आँख की बीनाई चली जाने की वजह से कुर्आन पाक सुनने का मामूल था, और उसमें ऐसी पाबन्दी थी कि शायद ही कभी नाग़ा हुआ हो, सफर हो हज़र हो, जहां भी हों हालांकि अगर उस वक़्त गाड़ी से कहीं सफर कर रहे हों या ट्रेन का सफर हो तब भी सुनते थे। इधर तीन चार सालों से अहकर तक़रीबन हर सफर में साथ रहा, वहां पाबन्दी देखी, सुनाने वाला चाहे भूल जाये मगर अब्बा कभी नहीं भूलते थे, और हम को ऐसा लगता था कि अब्बा पूरे दिन उसे ध्यान में रखते थे क्योंकि जहां तक सुबह सुनते शाम को उसके आगे का बता देते कि इसके आगे सुनना है, जब कि वह हाफिज़ नहीं थे, लेकिन इसकी फिक्र कहीं छुट न जाये और अगर कभी कोई सुनाने वाला न मिला तो दूसरे वक़्त या दूसरे दिन उसको पूरा करते, हम से

कहते थे कि सुब्ह कुर्आन पढ़ने का मामूल बनाओ और कुर्आन पढ़े बगैर कोई काम न करो, और फरमाते जब से मुहम्मद जकरीया कन्धिलवी रह0 से तअल्लुक़ काइम हुआ है तब से आज तक कोई काम बगैर कुर्आन मजीद की तिलावत के नहीं किया, और यह मामूल तक़रीबन 60 साल पर मुहीत है, हम को अब्बा ही ने तफ़्सीर से तखस्सुस करने का हुक्म दिया था और फरमाया था कि तुम हाफिज़ हो उससे तुम को बड़ा फाइदा होगा, कई बार ऐसा हुआ कि हमने अब्बा से कुर्आने करीम में कुछ ऐसे अल्फाज़ जो कई मानों में इस्तेमाल होते हैं उनके बारे में पूछा तो जहां जहां उनका इस्तेमाल हुआ है और जिन जिन मानों में इस्तेमाल हुआ है उसके बारे में बताते, कहीं अगर कोई लफ़्ज़ जाइद है या पोशीदा है तो उसके बारे में बताते और कई तफ़्सीर की किताबों के नाम बताते कि उनमें उस की तशरीह किस तरह की गई है।

अब्बा के मुतअल्लिक़ सब यही समझते हैं कि उनका अस्ल मौजूअ़ अरबी अदब और फिक्रे इस्लामी था इसमें कोई शक नहीं कि वह इस मौजूअ़ पर मर्जअ़ थे, लेकिन उस के साथ साथ उनको कुर्आन व हदीस से गैर मामूली शग़फ़ था उसकी तरफ आमतौर पर लोगों की नज़रें नहीं गईं क्योंकि अब्बा ने कभी कुर्आन के मौजूअ़ पर या हदीस के मौजूअ़ पर दर्स नहीं दिया क्योंकि अब्बा इसको बड़ी जिम्मेदारी का काम समझते थे, एक मरतबा अब्बा अब्बासिया हाल में पढ़ा रहे थे और दूसरे दरजे में हज़रत मौलाना बुरहानुद्दीन संभली साहिब का कश्शाफ का दर्स था हज़रत मौलाना अपने तलबा के साथ अब्बासिया हाल आ गये और अब्बा से कहा कि यहां हम को पढ़ाना है क्योंकि दूसरी जगह हम को परेशानी होती है, अब्बा ने पूछा आप कौन सी किताब पढ़ाते हैं? उन्होंने फरमाया कि कश्शाफ! अब्बा फौरन अपनी कुर्सी से उठे और फरमाया कि अदब, तफ्सीर के बराबर नहीं हो सकता कुर्आन मजीद की अज़मत ने उनको उस जगह से उठा दिया इस तरह के मुतअ़द्दिद वाकिआत हैं कितनी दफा ऐसा हुआ कि लफ़्ज़ के माअ़ना नहीं बताये कि कहीं गलती न हो जाये अगर कोई पूछ लेता तो फरमाते किसी दूसरे से पूछो, कितनी बार अच्छे अब्बा (हज़रत मौलाना सय्यिद मुहम्मद राबे हसनी नदवी) से मअ़ने पूछे जब कि खुद उनको मालूम है लेकिन अदबन बड़े से पूछते।

अब्बा ने कुर्आन मजीद को इतना पढ़ा था कि उसकी एक एक चीज़ को अज़बर कर लिया था, रमज़ान में कुर्आन पाक की तिलावत सुनने का मामूल बढ़ जाता गैर रमज़ान में जहां दो पारे सुनने का मामूल था वहीं रमज़ान में पाँच पारे रोज़ाना सुनने का मामूल था, ऐसा लगता था कि अब्बा को कुर्आन मजीद से इश्क़ है। हमसे फरमाते कि सूरे यासीन रोज़ाना फज्र

में पढ़ने का मामूल बनाओ और कम अज़ कम दो पारे पढ़े बगैर कोई काम न किया करो। इससे बरकत होती है, यह हमारे लिए खुश किस्मती की बात है कि अब्बा से बाराहे रास्त इस्तिफादा का हमको मौका मिला, उल्या सानिया शरीअ़ा में फिक्रे इस्लामी का घण्टा था, आमतौर पर मुहाज़रा की इब्तिदा कुर्आन मजीद की तिलावत से करते, कई बार ऐसा हुआ कि आयात सुन कर उन पर गिरया तारी हुआ, और उस का असर मुहाजरे में साफ महसूस हुआ, कुर्आन मजीद सुनने का मामूल इन्तिक़ाल तक जारी रहा, कोई दिन बगैर पढ़े या सुने न गुज़रा, इन्तिक़ाल भी कुर्आन मजीद की आयात सुनते हुए हुआ।

अब्बा के अन्दर मस्जिद से खास तअल्लुक़ था यह तअल्लुक़ कम लोगों में देखने को मिलता है, ऐसा लगता है कि वह इस हदीस के मिस्दाक़ थे।

तर्जमाः "ऐसा आदमी जिसका दिल मस्जिदों में लगा रहता हो (उसको हश्र के मैदान में अर्श का साया मिलेगा) कितनी बार ऐसा हुआ कि तबीयत की खराबी की वजह से लोगों ने रोका कि आप घर में या मेहमान खाने में नमाज़ पढ़ लें तो फरमाते मस्जिद में नमाज़ में दिल लगता है। एक खास कैफीयत पैदा होती है और बगैर किसी से बताये मस्जिद चले जाते, अज़ान से कुछ पहले मस्जिद जाते और नमाज़ खत्म होने के बाद देर तक मस्जिद में रहते, मस्जिद से उनको एक खास लगाव था जो दूसरों को नज़र आ जाता था। मुम्बई में कई बार दूर की मस्जिद में नमाज़ पढ़ने जाते ताकि सवाब ज़ियादा मिले, वह बगैर किसी की परवाह किये मस्जिद अकेले चले जाते थे, जब कि उनको देखने में परेशानी होती। उनको अन्दाज़ा इतना हो गया था कि किस रास्ते से जाना बेहतर होगा, और कौन सा रास्ता ज़ियादा आसान है और कई बार रास्ते में ठोकर भी लगी जिस से पांव ज़ख़्मी भी हुए कोशिश करते थे कि ज़ियादा वक़्त की नमाज़ें मस्जिद में हों, जब तक्या कलां में रहते थे मस्जिद में नमाज़ पढ़ते थे, नदवतुल उलमा में भी शायद ही कोई नमाज़ मस्जिद के अलावा कहीं पढ़ी हो।

अब्बा के अन्दर एक चीज़ ऐसी थी जो उनको सब से मुम्ताज बनाती है वह है दिल की सफाई यह ऐसी नेमत है जिस का कोई बदल नहीं हमने शायद ही कभी देखा हो कि किसी के तअल्लुक़ से मन्फी तबसिरा किया हो दोनों भाई जब तन्हा कभी गुफ्तगू करते तो इल्मी बातें करते और अपने अस्लाफ का ज़िक्र करते वह मजलिस, नूरानी मजलिस होती थी अब्बा को अगर कोई बात खिलाफे शरअ़ नज़र आती तो उसको रोक देते थे, उनके पास जिसको भी बैठने का मौक़ा मिला हो उसको यह मालूम होगा कि अब्बा कभी भी लायानी बातें न करते थे और न करने देते थे अगर कोई उनके पास किसी की बुराई करता था

तो साफ कहते थे जाओ दूसरा काम करो, गीबत न करो, वक़्त को जाये न करो, वह गैर ज़रूरी मजलिस को ना पसन्द करते थे वह मजलिसी आदमी नहीं थे और न गैर ज़रूरी मजलिस में बैठते थे बुजुर्गों से खास तअल्लुक़ था हज़रत शैखुल हदीस मौलाना मुहम्मद जकरीया कान्धिलवी रह0 से अपना तअल्लुक़ काइम रखा और देहली कियाम के ज़माने में मरकज़ निजामुद्दीन पाबन्दी से हर हफ़्ता जाते थे मुतअ़द्दिद बार जमाअतों में वह हज़रत मौलाना मुहम्मद युसुफ साहिब कान्धिलवी रह0 के साथ गये और कई कई दिन उनके साथ कियाम किया उनके बाद हज़रत मौलाना इनआमुल हसन कान्धिलवी रह0 के साथ भी काफी वक़्त गुज़ारा, वह कहते थे कि हम सब को अपनी इस्लाह के लिए किसी न किसी को अपना बड़ा बनाना पड़ेगा।

उन्होंने अपने मामूँ हज़रत मौलाना सय्यिद अबुल हसन अली हसनी नदवी रह0 के इन्तिक़ाल के बाद अपने बड़े भाई हज़रत मौलाना सय्यिद मुहम्मद राबे हसनी नदवी को अपना बड़ा और सरपरस्त मान लिया था और सिर्फ इल्मी या दीनी कामों में बड़ा नहीं माना बल्कि जाती मुआमलात में रोज़ मर्रा की ज़िन्दगी में भी उनको बड़ा माना और कोई काम उनकी इजाज़त के बगैर कभी नहीं किया वह साफ कहते थे कि हर एक का एक अमीर होता है और मैने अपना अमीर छोटे भय्या (हज़रत मौलाना सय्यिद मुहम्मद राबे हसनी नदवी) को बना लिया है। अगर नदवा से खातून मन्ज़िल जाना होता तब भी बता कर जाते।

एक अहम चीज़ जो अब्बा की ज़िन्दगी में नज़र आती है वह है रिश्तेदारों के साथ हुस्ने सुलूक़, यह चीज़ जो आज की दुन्या में मफ़कूद नज़र आती है लेकिन अब्बा इस का बड़ा एहतिमाम करते थे कभी कभी लोगों को नागवार गुज़रता था क्या ज़रूरत है उनसे मिलने के लिए जाने की जब कि उम्र में और इल्म में अब्बा उन से बड़े होते थे लेकिन फिर भी मिलने के लिए या इयादत करने के लिए उनके पास जाते इस का एहतिमाम उनकी ज़िन्दगी में बहुत था उनकी ज़िन्दगी एक पैगाम है।

आखिरत की फिक्र का एहसास उनके अन्दर बहुत था उल्या सानिया शरीअ़ा के तलबा में जो मुहाज़रात होते थे कुर्आन मजीद की किसी सूरे से इब्तिदा करते और उसी से अपना मुहाज़रा शुरुअ करते, एक मरतबा सूर "अज़्ज़ुहा" की तिलावत करवाई और जैसे ही वह तालिबे इल्म "व लल–आखिरतु खैरुल्लक मिनल ऊला" पर पहुंचा तो रिक़्क़त तारी हो गई मंगलोर की तक़रीर जो उनकी शाहकार तक़रीर थी उसमें उन्होंने दुन्या की हक़ीक़त को बयान किया था और ऐसा पुर जोश बयान था कि ऐसा कम ही सुना गया होगा, ऐसा मालूम होता था कि वह उम्र के आख़िरी दौर में हैं और वह यह समझ

रहे थे कि अब चल चलाव का वक़्त है और बार बार यह दुहराते ''कल मुलाकात होगी अपने महबूबों से, मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और उनकी जमाअत से'' और यह कहते कहते रो पड़ते और कहते कि उन लोगों की क्या जिन्दगियां थीं जिन्होंने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का साथ दिया आप की सुहबत में अपने शब व रोज़ गुज़ारे, अपनी वफ़ात से एक दिन पहले कुर्आन मजीद की आयात सुन रहे थे आख़िरत का तज़किरा आ गया बस बे इख़्तियार ज़बान से निकला ''ऐ अल्लाह हम को मौत की सख़्ती से बचा ले'' बार बार अरबी में यह दुआ की और पोते से फरमाया! दुआ़ करना अल्लाह तआला मौत की सख़्ती से महफूज़ रखे और अल्लाह तआला ने उनकी दुआ सुन ली, मौत की सख़्ती से उनको बचा लिया और बगैर किसी तक़्लीफ के वह दुन्या से रुख़्सत हो गये।

अब्बा की ज़िन्दगी नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कि ज़िन्दगी से करीब तर थी आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जिस तरह अपना काम खुद करते थे इसी तरह अब्बा ने भी अपनी ज़िन्दगी का मामूल बना लिया था कि किसी से काम नहीं लेना है हत्ता कि अपने पोतों से भी काम लेना पसन्द न करते थे कभी भी कोई काम खुद से कहा हो हत्ता कि जब घर आते तो अपना सामान खुद तरतीब से रखते अगर किसी और का सामान होता तब भी खुद ही से मुरत्तब करने लगते अगर कोई देख लेता और आ जाता तो उसके हवाले कर देते। नदवतुल उलमा में मेहमान खाने में भी किसी तालिबे इल्म से कभी कोई काम नहीं लिया और जिन लोगों से कुर्आन मजीद सुनते थे उनका एज़ाज़ करते थे और उनका बहुत खयाल करते थे बल्कि कुछ हदिया भी देते थे। वह किसी का एहसान नहीं लेना चाहते थे, जब मोतमद तालीम के दफ्तर से मेहमान खाना जाते तो अपना बैग खुद ही लेते, किसी तालिबे इल्म को लेने न देते, कितनी बार ऐसा हुआ कि खातून मन्ज़िल जाना होता तो किसी की बाइक से जाते, खुद राक़िम कितनी बार घर ले गया है। कभी अगर कोई कह देता कि नदवा की गाड़ी इस्तेमाल कर लें तो साफ मना फरमाते, असातज़ा से हमेशा रब्त व तअल्लुक रखा हर किसी की बातों को सुनते थे, और फिर इन्तिज़ामिया के सामने उस को पेश करते थे, हमने खुद देखा है कि रमज़ानुल मुबारक में कितने तालिबे इल्म जो सानवी दरजात के होते थे अगर अब्बा को कुछ लिख कर दिखाते तो उस को देखते और उसकी इस्लाह फरमाते थे कितने लोगों को उन्होंने क़लम पकड़ना सिखाया। अब्बा के अन्दर हिम्मत अफ्ज़ाई करने का एक खास जज़्बा था वह हर तालिबे इल्म को एक नज़र से देखते थे।

अब्बा की ज़िन्दगी अमली थी उनकी ज़िन्दगी सलफ की आईना दार थी,

वह नमाज़ इस तरह पढ़ते जैसे हदीस में बयान किया गया है कि ''अल्लाह की इबादत ऐसे करो जैसे उसको देख रहे हो अगर तुम उसको नहीं देख सकते तो वह तो तुम को देख ही रहा है''।

अब्बा ने कभी किसी के साथ बुरा सुलूक नहीं किया, वह हर किसी के साथ बेहतर से बेहतर सुलूक करते थे, वह इस आयत के मिस्दाक़ थे तर्जुमाः ''उनको जो कुछ मिलता है उसमें मुहाजिरीन को मुकद्दम रखते हैं अगरचे खुद फाके़ ही में हों'' (देखिए अल–हश्रः9)

अपना नुक्सान ही क्यों न हो जाये दूसरों का भला हो जो उनके साथ किसी तरह का अच्छा सुलूक कर देता उसका एहसान ज़िन्दगी भर मानते और चाहते कि उसके एहसान का बदला इससे अच्छा दिया जाये वह हर किसी की तक्लीफ को सुन कर परेशान हो जाते अगर कोई उनके पास बैठ जाता कुछ पूछता तो उस से कहते हज़रत मौलाना सय्यिद मुहम्मद राबे हसनी नदवी से पूछो, उन्होंने अपनी ज़िन्दगी को मिटा दिया था, अल्लाह के दीन की सरबुलन्दी के लिए उन्होंने अपने क़लम को वक़्फ़ कर दिया था, मगरिबी अफ़्कार का तूफ़ान जिस तेज़ी से मुस्लिम मुआशरे में आ रहा है उस पर उनकी गहरी नज़र थी, वह समझ रहे थे कि इस्लाम की सरबलन्दी के लिए दुश्मनों की चालों को खूब समझना होगा, मुकाबला करने के लिए मुक़ाबिल की चीज़ों से वाकि़फीयत बहुत ज़रूरी है, वह एक ऐसी नवजवान नस्ल की तरबीयत कर रहे थे जिससे उनको उम्मीद थी कि इस्लाम के लिए यह नस्ल अपने क़लम व ज़बान का इस्तेमाल करेगी।

अब्बा ने मगरिब को बहुत क़रीब से देखा बल्कि एक बड़ा वक़्त इसी माहौल में गुज़ारा लेकिन उनका दिल ईमानी व नूरानी था जिस में अल्लाह से सच्चा तअल्लुक और नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सच्ची महब्बत थी इसलिए वह मगरिब के शर से महफूज़ रहे।

इन्सान जब चला जाता है तो उसकी चीज़ों को याद किया जाता है ताकि आने वाली नस्ल को अपने अस्लाफ की बातें याद रहें और वह उनकी चीज़ों को इख्तियार करें। अब्बा की हमने उन्हीं चीज़ों को खास कर तहरीर किया है जो हम ने खुद देखी हैं और यह रोज़ मर्रा की चीज़ें हैं। तअज़ियती जल्सों और तअजियती मज़ामीन का एक बड़ा फाइदा यह है कि हम उनकी अमली ज़िन्दगी से बहुत फाइदा उठा सकते हैं। अब्बा की ज़िन्दगी से यह पैगाम मिलता है कि इन्सान अगर अपने दिल को गुनाहों की आलूदगियों से पाक व साफ रखे तो इन्शा अल्लाह दुन्या में सुर खुरूई मिलेगी और आखिरत में भी काम्याबी उस का मुकद्दर होगी।

नोटः– इस मजमून में आया है कि मौलाना की बीनाई चली गई थी अस्ल में बीनाई पूरी तरह नहीं गई थी बल्कि

शेष पृष्ठ...28 पर

आपके प्रश्नों के उत्तर

—मुफ़्ती मुहम्मद ज़फर आलम नदवी

प्रश्न: रोज़ा किसे कहते हैं?

उत्तर: सुब्हे सादिक़ से गुरूबे आफ़ताब तक नीयत के साथ खाने पीने और नफ़्सानी ख्वाहिश (काम इच्छा) पूरी करने को छोड़ देने का नाम रोज़ा है।

रोज़े को अरबी में सौम कहते हैं उसकी जमअ् सियाम आती है, रोज़ा खोलने को इफ़्तार कहते हैं और जिस खाने की चीज़ से रोज़ा खोलते हैं उस को इफ़्तारी कहते हैं।

प्रश्न: रमज़ान के रोज़ों का क्या हुक्म है?

उत्तर: हर आकि़ल बालिग़ मुसलमान मर्द, औरत पर रमज़ान के रोज़े फर्ज़ हैं इन रोज़ों को शरई उज़्र के बगैर छोड़ने वाला फासिक़ है।

प्रश्न: वह कौन कौन से उज़्र हैं जिन से रोज़ा न रखना जाइज़ हो जाता है?

उत्तर: (1) सफर यानी मुसाफिर को हालते सफर में रोज़ा न रखना जाइज़ है लेकिन अगर सफर में मशक़्क़त (कठिनाई) न हो तो रोज़ा रखना अफ़्ज़ल है।

(2) मरज़ यानी ऐसी बीमारी जिस में रोज़ा रखने की ताक़त न हो या बीमारी के बढ़ जाने का अन्देशा (भय) हो।

(3) बहुत बूढ़ा होना।

(4) हामिला होना (गर्भित होना) जब कि औरत को या हम्ल को रोज़े से नुक्सान पहुंचने का गुमाने गालिब हो।

(5) दूध पिलाना, जब कि दूध पिलाने वाली को या बच्चे को रोज़े से नुक्सान पहुंचता हो।

(6) रोज़े से इस कदर भूक या प्यास का गल्बा हो कि जान निकल जाने का अन्देशा हो जाये।

(7) हैज़ व निफास की हालतों में रोज़ा रखना जाइज़ नहीं।

प्रश्न: क्या रोज़े के लिए नीयत करना ज़रूरी है?

उत्तर: हाँ रोज़े के लिए नीयत करना शर्त है, अगर इत्तिफाक़ी तौर पर सुब्हे सादिक़ से गुरूबे आफ़ताब तक खाने पीने और सुहबत से बचा रहा लेकिन रोज़े की नीयत नहीं थी तो रोज़ा न होगा।

प्रश्न: नीयत किस वक़्त करना ज़रूरी है?

उत्तर: रमज़ान शरीफ और नज़रे मुअय्यन और सुन्नत और नफ़्ल रोज़ों की नीयत रात से करे या सुब्ह को आधे दिन से पहले पहले तक जाइज़ है, दिन से मुराद शरई दिन है जो सुब्हे सादिक़ से गुरूबे आफ़ताब तक का नाम है। मसलन अगर चार बजे सुब्हे सादिक़ हो और 6 बजे आफ़ताब गुरूब हो तो शरई दिन चौदा घण्टे का हुआ और आधा दिन ग्यारा बजे हुआ तो ग्यारा बजे से पहले पहले नीयत कर लेना ज़रूरी है।

लेकिन क़ज़ाए रमज़ान और कफ़्फ़ारे और नज़्रे ग़ैर

मुअय्यन की नीयत सुब्हे सादिक़ से पहले कर लेना ज़रूरी है।

प्रश्नः नीयत किस तरह करना चाहिए?

उत्तरः रमज़ान शरीफ और नज़्रे मुअय्यन और सुन्नत और नफ़्ल रोज़ों की नीयत में तो चाहे खास उन रोज़ों का क़स्द करे या सिर्फ यह इरादा कर ले कि रोज़ा रखता हूं या नफ़्ल रोज़े की नीयत करे, बहर सूरत रमज़ान में रमज़ान का रोज़ा और नज़्रे मुअय्यन के दिन नज़्र का रोज़ा और बाक़ी दिनों में सुन्नत या नफ़्ल का रोज़ा हो जायेगा और नज़्रे गैर मुअय्यन और कफ़्फारा और क़ज़ाए रमज़ान की नीयत में खास उन रोज़ों का क़स्द करना ज़रूरी है।

प्रश्नः नीयत ज़बान से करना ज़रूरी है या नहीं?

उत्तरः नीयत कस्द और इरादा करने को कहते हैं, दिल से इरादा कर लेना काफी है ज़बान से कह ले तो बेहतर है, न कहने में कुछ हरज नहीं।

प्रश्नः रोज़े के मुसतहब्बात क्या क्या हैं?

उत्तरः (1) सहरी खाना

(2) रात ही से नीयत करना

(3) सहरी आखिरी वक़्त में खाना लेकिन सुब्हे सादिक़ से पहले फारिग हो जाये।

(4) इफ़्तार में जल्दी करना जब्कि आफ़्ताब के गुरूब न होने का शुब्हा न रहे।

(5) गीबत, झूठ, गाली ग्लोज वगैरा बुरी बातों से बचना

(6) छुहारे या खजूर से और यह न हो तो पानी से इफ़्तार करना।

प्रश्नः तरावीह की नमाज़ का क्या हुक्म है?

उत्तरः रमज़ान में तरावीह की नमाज़ पढ़ना सुन्नते मुअक्कदा है, यह नमाज़ इशा के फर्ज़ और दो सुन्नतें अदा करने के बाद दो दो रकअ़त कर के बीस रकअतें पढ़ी जाती हैं। चाहिए कि यह नमाज़ एहतिमाम के साथ जमाअत से अदा करें इस नमाज़ में पूरा कुर्आन मजीद खत्म करना चाहिए अगर पूरा कुर्आन मजीद सुनाने वाला हाफिज़ न मिल सके तब भी यह नमाज़ बीस रकअत अदा की जाये। नमाज़े तरावीह के खत्म पर वित्र की नमाज़ जमाअत से पढ़ी जाये अगर किसी की जमाअत छूट गई हो तो वह तन्हा तरावीह की नमाज़ पूरी कर के सुन्नत का सवाब हासिल करे औरतों को चाहिए कि अगर उनको कोई शरई उज़्र न हो तो घर पर तरावीह की नमाज़ पढ़ लिया करें।

प्रश्नः क्या ज़कात की अदायगी रमज़ान में ज़रूरी है?

उत्तरः साहिबे निसाब को चाहिए कि वह अपनी ज़कात की अदायगी का साल में कोई महीना मुकर्रर करे और चूंकि रमज़ान में हर नेकी का सवाब सत्तर गुना बढ़ा दिया जाता है इसलिए बेहतर है कि वह अपनी ज़कात की अदायगी के लिए रमज़ान का महीना मुकर्रर करे।

प्रश्नः हम दुरूद में पढ़ते हैं "अल्ला हुम्म सल्लि अ़ला मुहम्मदिंव् व अ़ला आलिही व अस्हाबिही व बारिक व सल्लिम" सवाल यह है कि "अस्हाबिही" से मुराद सिर्फ मर्द सहाबा हैं या इसमें अज़्वाज मुतहरात और सारी सहाबियात रज़ि0 भी शामिल हैं?

उत्तरः पूछे गये सवाल में "अस्हाबिही" में तमाम सहाबा,

सहाबियात और अज़वाज मुतहरात रज़ि0 सब शामिल समझे जायेंगे, कुर्आन मजीद में इसकी बेशुमार मिसालें मौजूद हैं कि ज़िक्र मुजक्कर का आया है मगर मुराद मुअन्नस भी हैं जैसे सूरे बक़रा के शुरुअ में है तर्जुमा– ''जो गैब पर ईमान रखते हैं, और नमाज़ की पाबन्दी करते हैं और जो कुछ हमने उनको दिया है उसमें से खर्च करते रहते हैं और जो ईमान रखते हैं उस (किताब) पर भी जो आप सल्ल0 पर नाज़िल की गई। और उन (किताबों) पर भी जो आप से पहले नबियों पर नाज़िल की गई और आखिरत पर भी वह पूरा यक़ीन रखते हैं यही हैं अपने रब की तरफ से मिली हुई हिदायत पर और यही हैं पूरी तरह काम्याब''।

यहां सारे सीग़े मुजक्कर के हैं मगर मुराद मर्द व औरतें दोनों हैं।

प्रश्नः क्या बैंक से हासिल की हुई सूदी रक़म मजबूरी की हालत में रिशवत में दी जा सकती है? अगर रिशवत न दी जाये तो काम होना मुश्किल और नुक्सान का अन्देशा रहता है, इस सूरत में क्या करना चाहिए?

उत्तरः रिशवत देना खुद हराम है और रिशवत के साथ इस में सूद की रक़म देना दुहरा गुनाह है, इसलिए यह सूरत जाइज़ नहीं है, हां अगर कोई नाहक़ जुल्म से बचने के लिए रिशवत देने पर मजबूर हो जाये तो उस सूरत में उस की गुंजाइश हो सकती है लेकिन इसके लिए ज़रूरी है कि किसी मुकामी दारुल इफ़्ता के मुफ़्ती के सामने सारे अहवाल रख कर उनसे राय ली जाये वह जो राय दें उस पर अमल किया जाये।

प्रश्नः क्या दरखतों को किराये पर देना जाइज़ है?

उत्तरः दरखतों को किराये पर देना जाइज़ नहीं है? फुकहा ने सराहत की है कि दरखत का किराया दुरुस्त नहीं।

(रद्दुल मुहतारः 5/7)

❖❖❖

कुछ यादें कुछ बातें..........

इतनी कमज़ोर हो गई थी कि आप लिख पढ़ नहीं सकते थे लेकिन देखते थे, जिस का सबब यह हुआ था कि आप की आँखों का मोतिया बिन्द का काम्याब आप्रेशन हुआ था लेकिन दूरबीनी आप्रेशन से अन्दर का पर्दा ''रेटीना'' मुतअस्सिर हो गया था जो अब तक ला इलाज है।

मोतिया बिन्द का यह दूरबीनी ऑप्रेशन 70 साल से ऊपर के लोगों के लिए खतरे से खाली नहीं। मेरे इल्म में कई ऐसे बूढ़े लोग हैं जिन का दूरबीनी आप्रेशन में रेटीना खराब हुआ।

(सम्पादक)

❖❖❖

रहमत तेरी नबी पे या रब

हुब्बे नबी जो रखता है
वह हुब्बे सहाबा रखता है
किसी सहाबी से भी दिल में
बुग़्ज़ नहीं वह रखता है
रहमत तेरी नबी पे या रब
और हों लाखों सलाम
आले नबी, अस्हाबे नबी पर
रहमत या रब रहे मुदाम

❖❖❖

मानव अधिकार दिवस और दुन्या का वर्तमान हाल

—मौलाना सय्यिद मुहम्मद वाज़ेह रशीद हसनी नदवी प्रस्तुतिः गुफ़रान अहमद नदवी

हर साल दिसम्बर की 10 तारीख को पूरी दुन्या में ''मानव अधिकार दिवस'' मनाया जाता है, क्योंकि यह वह दिन है जब विश्व युद्ध की तबाही के बाद दुन्या के सभ्य और पढ़े लिखे लागों ने मानव अधिकार का एक घोषणा पत्र (Human Rights Charter) जारी किया था। जिसमें प्रतिज्ञा ली गयी थी कि इन्सानी जान व माल और इज्ज़त व आबरू की हिफ़ाज़त की जायेगी और उन्हें हर प्रकार की सुरक्षा उपलब्ध कराई जायेगी, इन्सानों के बीच धर्म, जाति का भेद भाव नहीं होगा बल्कि ऐसा माहौल बनाने की कोशिश की जाये जिसमें हर इन्सान को आज़ादी हासिल हो, किसी के एहसास व भावना को ठेस न पहुंचे, और उसके मज़हब व अक़ीदे के साथ खिलवाड़ न किया जाये, बल्कि मानवता का सम्मान किया जाये और इन्सान के जान व माल की हिफ़ाज़त का इन्तिज़ाम किया जाये, जाति वंश भाषा और वतन धर्म की बुन्याद पर भेद भाव न हो सबको समान समझा जाये।

मानव अधिकार का यह विश्व घोषणा पत्र तीस धाराओं पर आधारित है उसकी पहली धारा में कहा गया है कि तमाम इनसान आज़ाद पैदा होते हैं और वह मानव अधिकार और मानव सम्मान में बराबर हैं, पैदाइशी तौर पर उनमें बुद्धि और चेतना की योग्यता रखी गयी है इसलिए ज़रूरी है कि वह आपस में बिरादराना सुलूक़ करें। इस विश्व चार्टर की पांचवीं धारा में कहा गया है कि न तो किसी को टार्चर किया जा सकता है न उसके साथ सम्मानहीन और गैर इन्सानी बरताव किया जा सकता है और 18वीं धारा में इस बात पर ज़ोर दिया गया है कि हर इन्सान को फिक्ऱ व सोच और मज़हब की आज़ादी हासिल है कि वह अपने मज़हब व अक़ीदे के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारे अपनी धार्मिक विशेषता और शिक्षा का पालन करे। व्यक्तिगत रूप से भी और सामूहिक रूप से भी। यह इस बात का एलान था कि अब इन्सान को आजादी नसीब होगी, उसके जान माल की सुरक्षा की जायेगी और ज़ालिमों के चंगुल से बेकस मज़लूमों (उत्पीड़ित असहाय) को रिहाई मिलेगी। इस घोषणा को हाथों हाथ लिया गया और मुसलमानों ने भी इसका बढ़—चढ़ कर स्वागत किया। क्योंकि उस समय मुसलमान

फ़ौजी, फ़िक्री तहज़ीबी हमलों का निशाना बने हुऐ थे और बड़ी कुरबानियों के बाद उन्हें आज़ादी नसीब हुई थे। लेकिन उस आज़ादी के हासिल होने के बाद भी उनके निजी मुआमलात में हस्तक्षेप होता रहा।

मुसलमानों का इस चार्टर का स्वागत करना उनके नेचर के अनुकूल था, उनका मज़हब भी उन्हें इस बात की तालीम देता है कि वह मानवता का सम्मान करें शारीरिक सुरक्षा के साथ साथ भावनाओं का भी लिहाज़ रखें। कुर्आन करीम और हदीस शरीफ़ में इसकी बहुत ज़ियादा तालीम दी गई है:—

''और निश्चित रूप से हमने आदम की संतान को सम्मान प्रदान किया और थल और जल में उनको सवारी दी और उनको अच्छी —अच्छी रोज़ी दी और अपनी सृष्टियों में बहुतों पर उनको ख़ास रुत्बा प्रदान किया'' (अल इसरा—70)।

हुज़ूर अकरम सल्ल0 का इरशाद है कि ''ख़ुदा की मखलूक़ ख़ुदा का कुंबा है अल्लाह के नज़दीक सब से महबूब वह है जो कि उसके कुंबे के साथ हुस्न सुलूक़ अच्छा व्यवहार करे।

(अल—बैहक़ी)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फरमाया ''अल्लाह तआला क़ियामत के दिन फ़रमायेगा ऐ आदम के बेटे मैं बीमार पड़ा मगर तूने मेरी इयादत नहीं की? बन्दा कहेगा— ऐ मेरे रब मैं आपकी इयादत कैसे करता, आप तो तमाम जहान के रब थे, अल्लाह तआला फ़रमायेगा, मेरा फ़लां बन्दा बीमार था मगर तुमने उसकी इयादत नहीं की, क्या तुझे मालूम नहीं कि अगर तुम उसकी इयादत करते तो तुम मुझे उसके पास पाते। ऐ आदम के बेटे मैंने तुझ से खाना मांगा मगर तुम ने मुझे नहीं खिलाया, बन्दा कहेगा, ऐ मेरे रब! मैं आपको कैसे खाना खिलाता? आप तो सारे जहान के रब थे? अल्लाह तआला फ़रमायेगा, क्या तुम नहीं जानते कि मेरे फ़लां बन्दे ने तुम से खाना मांगा मगर तुम ने उसे खाना नहीं दिया, क्या तुम्हें नहीं मालूम कि अगर तुम उसे खिलाते तो तुम मुझे उसके पास पा लेते। ऐ आदम के बेटे मैंने तुम से पानी मांगा तूने मुझे नहीं पिलाया, बन्दा कहेगा ऐ मेरे रब मैं कैसे आप को पानी पिलाता आप तो सारे जहान के रब हैं। अल्लाह फ़रमायेगा, तुम से फ़ला बन्दे ने पानी मांगा मगर तुमने उसे नहीं दिया, अगर तुम उसे पानी पिलाते तो तुम मुझे उसके क़रीब पाते।

(मुस्लिम)

❖❖❖

अल्लाह रब्बुल आलमीन के हुज़ूर में दुआ (प्रार्थना)

—हज़रत मौलाना हकीम सय्यिद अब्दुल हयी हसनी रह0 —हिन्दी लिपिः हुसैन अहमद

बन्दों के मुक़ामात में सब से ऊँचा अ़ब्दीयत (दास्ता) का मुक़ाम है और सय्यिदुना हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इस मुक़ाम के इमाम यानी इस वस्फ खास (मुख्य गुण) में सब पर फाइक़ हैं (सर्वश्रेष्ठ हैं) और चुंकि दुआ अब्दीयत का जौहर और खास मज़हर है (दास्ता का हीरा तथा उस का मुख्य सूचक है) बन्दे का जाहिर व बातिन (प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष) अब्दीयत में डूबा होता है, इसलिए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हालात तथा गुणों में सर्वश्रेष्ठ गुण दुआ का है, आपने दुआ को दीन का एक स्थाई विभाग बना दिया अपितु बे झिझक यह कहा जा सकता है कि नुबूवते मुहम्मदी ने दुआ के विभाग को जिस प्रकार जीवित किया तथा उस को विकसित करके उसको सम्पूर्ण किया है, वह उससे पहले नहीं देखी गई न उसके पश्चात।

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने वंचित मानवता को पुनः दुआ की दौलत प्रदान की और बन्दों को अल्लाह से बात करने का अवसर उपलब्ध करा दिया, आपने हमको दुआ करना भी सिखाया, दुआ इन्सानों की तरफ से, मानवजाति की ओर से मानवीय आवश्यकताओं का भी ऐसा संपूर्ण प्रतिनिधित्व किया कि कियामत तक आने वाले इन्सानों को हर काल तथा हर स्थान में इन दुआओं में अपने मन की बात, अपने हालात की नुमाइन्दगी (प्रतिनिधित्व) और अपने संतोष का सामान मिलेगा जहां तक हर इन्सान के ज़ेहन का जाना मुश्किल है, अल्लाह तआला का इरशाद है— अनुवादः ''और जब तुम से मेरे बन्दे मेरी बाबत (विषय में) सवाल करें तो कह दो कि मैं क़रीब हूं, दुआ करने वाले की दुआ को क़बूल करता हूं''।

(सूरे बकराः 186)

और इरशाद है— अनुवाद ''और तुम्हारे रब ने फरमाया कि मुझ को पुकारो (यानी मुझ से दुआ मांगों) मैं तुम्हारी दुआओं को क़बूल करूंगा और जो लोग मेरी इबादत से घमण्ड करते हुए मुंह फेर लेंगे, उनको ज़लील व ख्वार हो कर जहन्नम में जाना होगा''।

(सूरे मोमिनः 60)

और इरशाद है— अनुवाद ''भला कौन बे करार की फरियाद को पहुंचता है, जब कि उसको वह पुकारता है और वह तक्लीफ को दूर कर देता है''।

(सूरे अन्नम्लः 62)

दुआ इबादत हैः—

हज़रत नोमान बिन बशीर रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया ''दुआ इबादत है'' (तिर्मिज़ी) हज़रत सलमान फारसी से

रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया ''तक़्दीर (यानी आने वाली आफत और बलाओं) के फैसले को दुआ ही बदल सकती है और नेकी उम्र में इज़ाफा करती है।''

(तिर्मिज़ी)

दूसरों के लिए दुआ अपने लिए दुआ हैः-

हज़रत अबू दरदा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को फरमाते हुए सुना है कि ''जो मुसलमान बन्दा अपने मुसलमान भाई की ग़ैबत में (यानी उसके पीछे उसके लिए दुआ करता है तो फिरिश्ता कहता है कि तुझ को भी वही भलाई मिले जो तू उसके लिए मांग रहा है और दुआ ज़रूर क़बूल होती है''। (मुस्लिम)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया ''तुम्हारी दुआएं ज़रूर क़बूल होती हैं, मगर जल्दी न करो और यह न कहो कि मैं ने दुआ की क़बूल न हुई''।

(बुख़ारी)

कबूलियते दुआ का वक़्तः-

हज़रत अबू उमामा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से लोगों ने अर्ज किया ''ऐ हज़रत! कौन से वक़्त दुआ क़बूल होती है? फरमाया ''पिछली रात को'' और हर फर्ज नमाज़ के बाद'' (तिर्मिजी)।

जामेअ़ दुआएंः-

हज़रत आ़इशा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जामेअ़ दुआओं को पसन्द फरमाते थे और उसके अलावा को छोड़ देते थे।

(अबू दाऊद)

हज़रत अनस रज़ि0 से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की अकसर यही दुआ होती थी "अल्लाहुम्म रब्बना आतिना फिद्दुन्या हसनतंव व फिल आखिरते हसनतंव वकिना अज़ाबन्नार'' (ऐ अल्लाह ऐ हमारे रब हम को दुन्या में भी भलाई अता फरमा और आखिरत में भी भलाई अता फरमा और हम को दोज़ख के अज़ाब से बचा ले)

(बुखारी)

मुसीबत के वक़्त की दुआः-

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम रंज व मुसीबत के वक़्त यह कलिमात अदा फरमाते थे ''ला इलाह इल्लल्लाहुल अज़ीमुल हलीम लाइलाह इल्लल्लाहु रब्बुस्समावाति व रब्बुल अर्ज़े व रब्बुल अर्शिल करीम''

अनुवादः अल्लाह बुजुर्ग बुर्दबार के सिवा कोई माबूद नहीं, अल्लाह बड़े अर्श के मालिक के सिवा कोई माबूद नहीं, अल्लाह तआला ज़मीन व आसमान और इज़्ज़त वाले अर्श के मालिक के सिवा कोई माबूद नहीं।

(बुखारी)

बेहतर दुआः-

हज़रत अबू उमामा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बहुत तरीक़ों से दुआएं की, उसमें से कुछ

हिस्सा याद नहीं रहा तो मैंने अर्ज किया, या रसूलुल्लाह आपने बहुत दुआएं कीं, मगर हम को कुछ भी याद न रहा, आपने फरमाया, मैं तुम को ऐसी दुआ न बता दूं जो उन सब दुआओं की जामेअ़ हो, फिर आपने फमरयाः कहो ''अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलुक मिन खैरिन मा सअलक मिन्हु नबिय्युक मुहम्मदुन व नऊज़ुबिक मिन शर्रिमा इस्तअ़ज़ मिन्हु नबिय्युक मुहम्मदुन व अन्तल् मुस्तआ़नु व अलैकल् बलाग़ु वला हौल व ला कुव्वत इल्ला बिल्लाहि अ़लिय्यिल् अज़ीम'' (ऐ अल्लाह मैं तुझ से उस चीज़ की भलाई का सवाल करता हूं, जिसे तेरे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तुझ से मांगी है और उस चीज़ की बुराई से पनाह चाहता हूं जिससे तेरे नबी ने पनाह मांगी, और तुझ से इआनत तलब की जाती है और तू ही मुराद को पहुंचाने वाला है, और न कुव्वत है, न ताक़त मगर अल्लाह की मदद से।

(तिर्मिज़ी)

अल्लाह तआला के नाम का वास्ताः–

हज़रत अब्दुल्लाह बिन बुरैदा रज़ि0 अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक शख्स को कहते हुए सुना ''अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलुक इन्नी अश्हदु अन्नक अन्तल्लाहु ला इलाह इल्ला अन्तल् अहदुस्समद लम यलिद् वलमयूलद् व लम यकुल्लहु कुफुवन अह़द'' (ऐ अल्लाह मैं तुझ से मदद मांगता हूं और मैं गवाही देता हूं कि तू ही अल्लाह है, तेरे सिवा कोई माबूद नहीं, तू एक है, माबूदे बरहक़ जो बेनियाज़ है, न किसी का बाप है और न किसी का बेटा और न कोई उस का हमसर है, यह कलिमात सुन कर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया तुम ने अल्लाह तआला से उस नाम का वास्ता दे कर मांगा कि उस का वास्ता दे कर मांगने पर वह देता है जब उस नाम के वास्ते से दुआ की जाती है तो वह दुआ क़बूल करता है।

(अबू दाऊद)

मसाइब और मुश्किल वक्त की दुआः–

आपत्तियों तथा कठिनाइयों के समय की दुआः– ''हज़रत सअ़द बिन अबी वक्कास रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया– हज़रते जुन्नून (हज़रत यूनुस अलै0) जब समन्दर की एक मछली का लुक्मा बन कर उसके पेट में पहुंच गये थे तो उस वक्त अल्लाह के हुज़ूर में उनकी दुआ और पुकार यह थीः– ''ला इलाह इल्ला अन्त सुब्हानक इन्नी कुन्तु मिनज़्ज़ालिमीन'' (मेरे मौला! तेरे सिवा कोई माबूद नहीं, तू पाक और मुकद्दस है, मैं ही ज़ालिम और पापी हूं) जो मुसलमान बन्दा अपने किसी मुआमला और मुश्किल में इन कलिमात के ज़रिये अल्लाह से दुआ करेगा, अल्लाह तआला उस को क़बूल ही फरमायेगा।

(तिर्मिज़ी)

हर चीज़ से हिफाज़त के लिए दुआः–

हज़रत अब्दुल्लाह बिन खुबैब रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझ से फरमाया शाम को और सुब्ह को (यानी दिन शुरुअ होने और रात शुरुअ होने पर) ''सूरे कुल हुवल्लाहु अहद'', ''कुल अऊज़ुबिरब्बिल् फलक़'' और कुल अऊज़ु बि रब्बिन्नासि'' तीन–तीन बार पढ़ लिया करो, हर चीज़ के लिए तुम्हारे लिए काफी होगी।

(अबू दाऊद)

हज़रत उस्मान रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया ''जो शख़्स हर दिन की सुब्ह और हर रात की शाम को तीन बार यह दुआ पढ़ लिया करे तो उसको नुक्सान नहीं पहुंचेगा, और किसी हादसे से दो चार नहीं होगा।

''बिस्मिल्लाहि ल यज़ुर्रू मअ़स्मिही शैउन् फिल् अर्ज़ि व ला फिस्माइ व हुवस्समीअुल अलीम्'' उस को कोई नुक्सान नहीं होगा। (तिर्मिज़ी)

नोटः– जो दुआएं अरबी ज़बान की हिन्दी लिपि में लिखी गई हैं उन को याद करते समय किसी जानकार से मदद लेना ज़रूरी है।

अरबी इबारत जो हिन्दी लिपी में लिखी गई है उसमें जो पूरा अक्षर हलन्त रहित हो उसको पृथक अक्षर की भांति जबर से पढ़ें, जबर के लिए आ की मात्रा लगाना गलत है। आ की मात्रा से कभी अरबी शब्द एक वचन से द्विवचन में चला जाता है, फिर आ की मात्रा अलिफ के बराबर खींची जाती है जब कि ज़बर को खींचना गलत है।

❖❖❖

सम्पादक को सदमा परपोते का ग़म

वह साढ़े चार साल का था, अब्दुल अजीज नाम था, हर तरह सेहतमन्द था, अज़ान होते ही चचा के साथ मस्जिद जाता, रुकू सज्दे करके वापस आता, मदरसा नूरुल इस्लाम गोला गंज लखनऊ में दाख़िला हुआ, तय हुआ कि 27 मार्च से स्कूल का रिक्शा उसको लाए ले जाएगा, 26 मार्च की शाम को सो गया, रात में पेट में दर्द हुआ हालत बिगड़ गयी, ट्रामा सेन्टर पहुँचाया गया जहां डॉक्टरों ने उसको मुर्दा क़रार दिया, ''इन्नालिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन'' पाठक समझ सकते हैं कि इस हादसे का बच्चे की माँ उसके बाप उसके दादा दादी और उसके बूढ़े परदादा नीज़ पूरे घर वालों पर क्या असर हुआ होगा, अल्लाह ने ग़म दिया वही सब्र देगा।

सम्पादक

अल्लाह अल्लाह किया करो

—ताबिश महदी

अल्लाह अल्लाह किया करो, दुख न किसी को दिया करो
जो दुन्या का मालिक है, नाम उसी का लिया करो
सबसे आला है अल्लाह
बरतरो बाला है अल्लाह
पल पल यह महसूस हुआ
क़ुदरत वाला है अल्लाह
अल्लाह अल्लाह किया करो, दुख न किसी को दिया करो
जो दुन्या का मालिक है, नाम उसी का लिया करो
शमसो क़मर भी उसके हैं
बहरो बर भी उसके हैं
ज़र्रह ज़र्रह है उसका
संगो शजर भी उसके हैं
अल्लाह अल्लाह किया करो, दुख न किसी को दिया करो
जो दुन्या का मालिक है, नाम उसी का लिया करो
दुन्या की रंगीन फ़ज़ा
करती है दिल का सौदा
लेकिन उसकी रहमत का
दरवाज़ा है सब पर खुला
अल्लाह अल्लाह किया करो, दुख न किसी को दिया करो
जो दुन्या का मालिक है, नाम उसी का लिया करो
कहते हैं दुन्या है गोल
है यह लेकिन डावां डोल
रहता है वह जिस दिल में
उसका नहीं है कोई मोल

अल्लाह अल्लाह किया करो, दुख न किसी को दिया करो
जो दुन्या का मालिक है, नाम उसी का लिया करो

जो चाहे वह करता है
कब वह किसी से डरता है
काफ़िर हो या हो मोमिन
सब की झोली भरता है

अल्लाह अल्लाह किया करो, दुख न किसी को दिया करो
जो दुन्या का मालिक है, नाम उसी का लिया करो

खान-ए-काबा देखा है
शहर मदीना देखा है
पूरी दुन्या में हम ने
उसका जलवा देखा है

अल्लाह अल्लाह किया करो, दुख न किसी को दिया करो
जो दुन्या का मालिक है, नाम उसी का लिया करो

रुतबा आली शान दिया
दीन दिया क़ुर्आन दिया
भेज के इक उम्मी रहबर
उस पे हमें ईमान दिया

अल्लाह अल्लाह किया करो, दुख न किसी को दिया करो
जो दुन्या का मालिक है, नाम उसी का लिया करो

❖❖❖

मौलाना वाज़ेह रशीद हसनी नदवी रह० की याद में

—इदारा

ज़िन्दगी यह आ़रजी है आख़िरत है मुस्तकि़ल
हैं सभी यह जानते होना है सब को मुनतकि़ल
हुक्मे रब पर अंबिया भी इस जहां से चल दिये
मुस्तफ़ा आख़िर नबी आंखों से ओझल हो गये
हज़रते वाज़ेह को जब जाने का पर वाना मिला
हो गये तैयार और लब्बैक या रब्बी कहा
आला इल्लीयीन में उनको मिली है जगह
जन्नतुल फिरदौस से भी आती है उसमें हवा
फ़ज़्ले रब से अब रहेंगे रहमते रब में सदा
है खुशी इसकी कि हज़रत को मिली रब की रिज़ा
बात इल्लीयीन की मैंने यहां पर जो कही
था तक़ाज़ा दिल का मेरे इसलिए मैंने कही
है यक़ीं मुझ को तो इस पर और यही उम्मीद है
इससे बढ़ कर भी नवाजिश की मुझे उम्मीद है
रहमतें या रब नबी पर और हों लाखों सलाम
उनकी सारी आल पर, अस्हाब पर भी या सलाम

❖❖❖

अहले खैर हज़रात की खिदमत में

2019 रमजानुल मुबारक में नदवतुल उलमा के लिए माली तआवुन हासिल करने की गरज़ से जिन असातिजह, कारकुनान व मुहस्सिलीन को जिस शहर या इलाके में भेजा जा रहा है, उसकी तफ्सील जैल में दी जा रही है, अहले खैर हजरात से तआवुन की दरख्वास्त है।

—मौलाना फ़ख़रुल हसन खाँ नदवी, नाजिर शो—बए—तामीर व तरक्की नदवतुल उलमा, लखनऊ

क्रमांक	अस्माए गिरामी (नाम)	मोबाइल नं0	उहदा (पद)	इलाका या शहर
1	कारी फ़ज़्लुर्रहमान सा0 नदवी	9919490477	उस्ताद हिफ़्ज़	मुम्बई
2	हाफिज अब्दुल वासे साहिब	9307884504	उस्ताद हिफ़्ज़	मुम्बई, भिवन्डी, मालेगांव
3	मौलाना अब्दुल वकील साहिब नदवी	9889840219	कारकुन शो—बए— इस्लाह मुआशरा	मुम्बई
4	मौ0 मुहम्मद इस्माईल सा0 न0	8604346170	उस्ताद माहद (महपतमऊ)	मुम्बई
5	मौलाना अब्दुल्लाह साहिब नदवी	7499549301	कारकुन द0 दारुल उलूम	मुम्बई न्यु मुम्बई
6	मौलाना मुहम्मद असलम साहिब मजाहिरी	9935219730	उस्ताद दारूल उलूम	मद्रास, विजयवाड़ा
7	मौ0 मुहम्मद इरफान सा0 नदवी	7505873005	उस्ताद माहद (महपतमऊ)	मद्रास, विजयवाड़ा
8	मौलाना मुहम्मद कैसर हुसैन साहिब नदवी	7897254496	उस्ताद दारूल उलूम	नवसारी, सूरत, धौलिया, वापी, बेलसाड़
9	मौलाना शफीक अहमद साहिब बांदवी नदवी	9935997860	उस्ताद माहद दारूल उलूम (सिकरौरी)	पटटन, पालनपुर व अतराफ
10	मौ0शमीम अहमद साहिब नदवी	9935987423	उस्ताद दारूल उलूम	हैदराबाद, निजामाबाद, नान्देड़
11	मौलाना अनीस अहमद साहिब नदवी	9450573107	उस्ताद दारूल उलूम	भटकल, शिमोगा टुमकूर, मन्की, मरड़ेश्वर
12	मौ0 रशीद अहमद साहिब नदवी	7795864313	उस्ताद दारूल उलूम	बंगलूर
13	मौ0 जुहैर अहसन साहिब नदवी	9889258560	उस्ताद माहद (सिकरौरी)	बंगलूर
14	मौ0 मुफ़्ती मु0 मुस्तकीम सा0न0	9889096140	उस्ताद दारूल उलूम	आसनसोल, कोलकाता
15	मौ0मुफ़्ती साजिद अली सा0 नदवी	8960204060	मुआविन इल्मी दारूलकज़ा	आसनसोल, कोलकाता
16	क़ारी अब्दुल्लाह खाँ सा0 नदवी	9839748267	उस्ताद तजवीद दारूलउलूम	देहली
17	हाफिज अकील अहमद साहब		उस्ताद हिफ़्ज़	हैदराबाद व आसपास
18	मौ0 मसऊद अहमद सा0 नदवी	9795715987	उस्ताद माहद (सिकरौरी)	कानपुर
19	मौ0 शकील अहमद सा0 नदवी	9305418153	कारकुन माहद (सिकरौरी)	इलाहाबाद

क्रमांक	अस्माए गिरामी (नाम)	मोबाइल नं0	उहदा (पद)	इलाक़ा या शहर
20	मौ0 मुहम्मद अमजद सा0 नदवी	9616514320	उस्ताद दारूल उलूम	संभल व अतराफ
21	मौलाना जमाल अहमद साहिब नदवी	9450784350	कारकुन शो–बए– दावत व इरशाद	मुगलसराय, सुल्तानपुर व अमेठी
22	बिस्मिल्लाह खाँ साहिब	9935169540	कारकुन माहद (सिकरौरी)	गोंडा, बहराइच, बलरामपुर, श्रावस्ती
23	मौलाना मुहम्मद नसीम साहिब नदवी	9670049411	उस्ताद माहद (महपतमऊ)	कानपुर, सन्डीला, गौसगंज, शाहजहांपुर
24	मौलाना बशीरुद्दीन साहिब	9889438910	उस्ताद मक्तब	लखनऊ शहर
25	मौलाना इम्तियाज साहिब नदवी	9984070892	उस्ताद माहद (महपतमऊ)	लखनऊ शहर
26	कारी बदरुद्दीन साहिब नदवी	9450647360	उस्ताद हिफ़्ज़	लखनऊ शहर
27	हाफिज़ मुबीन अहमद साहिब	9839588696	उस्ताद मक्तब	लखनऊ शहर
28	मौ0 अब्दुल मतीन साहिब नदवी	9450970865	उस्ताद दारूल उलूम	रामपुर, अमरोहा, मुरादाबाद
29	मौलाना इकरामुद्दीन सा0 नदवी	9839840206	मुहस्सिल शोबा	आसनसोल, कोलकाता
30	मौलाना शरफुद्दीन साहिब नदवी	9936740835	मुहस्सिल शोबा	नागपुर, कानपुर
31	क़ारी माजिद अली सा0 नदवी	9935626993	मुहस्सिल शोबा	सीतापुर, इन्दौर, उज्जैन, भोपाल
32	मौलाना साजिद अली साहिब नदवी	8400015009	मुहस्सिल शोबा	कर्नाटक, आंबूर व गाजियाबाद
33	मौ0 हिफज़ुर्रहमान सा0 थानवी	9997883282	मुहस्सिल शोबा	आसाम, झारखण्ड, बिहार
34	मौलाना मुहम्मद रिजवान साहिब कासमी	8401801990	मुहस्सिल शोबा	अहमदाबाद व दीगर अजला गुजरात
35	हाफिज़ अमीन असग़र साहिब	9161219358	मुहस्सिल शोबा	अलीगढ़, आगरा, फिरोज़ाबाद, सहारनपुर, बुलन्दशहर, सिकन्द्राबाद
36	मौलाना अलीमुद्दीन साहिब नदवी	8853258362	मुहस्सिल शोबा	खन्डवा, रतनागिरी, पूना, सितारा, कोल्हापुर
37	मौलाना मुहम्मद मुस्लिम साहिब मजाहिरी	8960513186	मुहस्सिल शोबा	औरंगाबाद, जालना, पूना, अहमदनगर, बनारस, मेरठ, मुजफ्फरनगर, बिजनौर, नजीबाबाद
38	मौ0 अब्दुलकुद्दूस सा0 कासमी	9161911515	मुहस्सिल शोबा	बनारस, भदोही, मिरजापुर
39	मौलाना अब्दुर्रहीम साहिब नदवी	7388509803	मुहस्सिल शोबा	बाराबंकी, झांसी, मऊ, आजमगढ़ व अतराफ
40	मौ0 अब्दुल माजिद खाँ साहिब	9918005726	मुहस्सिल शोबा	देहली, हरयाना व पंजाब

क्रमांक	अस्माए गिरामी (नाम)	मोबाइल नं0	उहदा (पद)	इलाक़ा या शहर
41	मौलाना मुहम्मद अक़ील साहिब नदवी	9389868121	उस्ताद मक्तब शहर	सीवान, चम्पारन, दरभंगा, समस्तीपुर, पटना
42	मौलाना अबुल हयात सा0 नदवी	9795891123	उस्ताद मक्तब शहर	पटना व अतराफ
43	मौलाना अब्दुल कबीर साहिब फारूक़ी	8853677677	उस्ताद मक्तब (महपतमऊ)	काकोरी व अतराफ लखनऊ
44	मौलाना मु0 मुशताक़ साहिब नदवी	9415102947	नाइब मुहतमिम (मदरसा मज़हरुल इस्लाम)	लखनऊ, कानपुर
45	हाफिज मुहम्मद नईम साहिब	9889444917	उस्ताद हिफ़्ज़ (मदरसा मज़हरुल इस्लाम)	मुम्बई, नागपुर
46	हाफिज बखशिश करीम साहिब	7388324879	उस्ताद हिफ़्ज़ (मदरसा मज़हरुल इस्लाम)	मुम्बई, पश्चिमी लखनऊ
47	कारी मुहम्मद सालिम साहिब	9889735087	निगरां तामीरात	मुम्बई, पुराना लखनऊ
48	मौलाना अब्दुर्रऊफ साहिब नदवी	9336096921	उस्ताद (मदरसा मज़हरुल इस्लाम)	कानपुर, मगरबी लखनऊ, बनारस, भदोही
49	मौलाना फहरान आलम साहिब नदवी	9235711407	उस्ताद (मदरसा मज़हरुल इस्लाम)	बस्ती, लखनऊ
50	मौलाना अशरफ अली रशीदी साहिब	7505526255	उस्ताद (मदरसा मज़हरुल इस्लाम)	लखनऊ
51	मौलाना लुकमान साहिब नदवी	9616593360	उस्ताद (मदरसा मज़हरुल इस्लाम)	लखनऊ, कानपुर, बाराबंकी
52	मौलाना सरताज अहमद साहिब कासमी	9889026124	उस्ताद (मदरसा मज़हरुल इस्लाम)	लखनऊ
53	मौलाना सईद अन्जुम साहिब	9305902746	उस्ताद (मदरसा मज़हरुल इस्लाम)	लखनऊ
54	डॉ0 मुहीउद्दीन साहिब	9415766507	उस्ताद (मदरसा मज़हरुल इस्लाम)	लखनऊ
55	हाफिज नजमुद्दीन साहिब	9616624133	उस्ताद मक्तब	लखनऊ
56	हाफिज जलील अहमद साहिब	9956492163	उस्ताद मक्तब	लखनऊ
57	मास्टर जमाली आसी साहब	9336048990	उस्ताद मक्तब	लखनऊ, कानपुर
58	हाफिज रकीमुद्दीन साहिब नदवी	9621040705	कारकुन कुतुब खाना	लखनऊ
59	कारी लियाक़त साहिब	9450367182	उस्ताद हिफ़्ज़	लखनऊ

Nadwatul Ulama
P.O. Box No. 93, Tagore Marg,
Lucknow - 226007 (India)

ندوة العلماء
ص.ب./٩٣، تيغورمارغ،
لكناؤ-٢٢٦٠٠٧ يوبى (الهند)

Date_____________   _____________التاريخ

09/09/2018   ۲۸/ذی الحجہ ۱۴۳۹ھ

باسمہٖ تعالیٰ

अपील बराए तामीर जदीद हास्टल

अल्लाह तआला का शुक्र है कि दारूल उलूम नदवतुल उलमा हजरत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी की संरक्षता में अपनी इल्मी व दीनी खिदमत में लगा हुआ है, दारूल उलूम में इल्मे दीन के तालिब इल्मों की अधिकता के कारण रिहाइश (निवास स्थान) की बड़ी समस्या हो गई, जिसकी वजह से तालिब इल्मों के दाखिले सीमित करने पड़ते हैं, और नये तालिब इल्मों की एक बड़ी संख्या मायूस होकर वापस हो जाती है। इस सूरतेहाल को देख कर नदवतुल उलमा की प्रबंधक कमेटी ने नये छात्रावास के निर्माण का निर्णय लिया है, जिसका संगे बुन्याद हज़रत मौलाना सैयद मुहम्मद राबे हसनी नदवी दामत बरकातुहुम के दस्ते मुबारक से रखा जा चुका है, और अल्लाह की मदद के भरोसे पर निर्माण कार्य शुरू कर दिया गया है।

इस नये छात्रावास में जो तीन मन्ज़िला होगा, 36 कमरे और 2 हाल होंगे, ताकि तालिब इल्मों की रिहाइश (निवास) के साथ दूसरी शिक्षा संबन्धित ज़रूरतें पूरी हो सकें और वह संतुष्टि होकर शिक्षा प्राप्त कर सकें।

इस निर्माण कार्य पर 3,61,74,600 (तीन करोड़, एक्सठ लाख, चौहत्तर हज़ार, छः सौ) रूपये, और एक कमरे पर लगभग साढ़े चार लाख रूपये के खर्च का अन्दाज़ा है, जो इन्शाअल्लाह अहले खैर के तआवुन (सहयोग) से पूरा होगा। हम उम्मीद करते हैं कि आप इस महत्वपूर्ण कार्य की ओर अवश्य ध्यान देंगे और नदवतुल उलमा के कार्यकर्ताओं का हाथ बटाएंगे।

हमें अल्लाह तआला पर भरोसा है कि उसकी मदद से यह अहम काम पूर्ति को पहुंचेगा।

मौलाना तकीयुद्दीन नदवी	प्रो0 अतहर हुसैन	मौ0 सईदुररहमान आज़मी नदवी
(मोतमद तअलीम, नदवतुल उलमा)	(मोतमद माल, नदवतुल उलमा)	(मोहतमिम दारूलउलूम, नदवतुल उलमा)

चेक / ड्राफ्ट पर सिर्फ यह लिखें।

NADWATUL ULAMA
A/C NO. 10863759733 (IFSC CODE - SBIN0000125)
(State Bank of India Main Branch, Lucknow.)

और इस पते पर भेजें।

NIZAMAT OFFICE, NADWATUL ULAMA,
P.O. BOX NO. 93, TAGORE MARG,
LUCKNOW - 226007 (U.P.)

Phone: +91-522-2741316, Guest House: 2740141, Fax: 2741023
e-mail: nadwa@sancharnet.in, website: www.nadwatululama.org

उर्दू सीखिये

हिन्दी जुम्लों की मदद से उर्दू जुम्ले पढ़िये

बाहम महब्बत रखना इन्सानियत का तक़ाज़ा है

باہم محبت رکھنا انسانیت کا تقاضا ہے

बड़ों का अदब व एहतिराम करना ज़रूरी है

بڑوں کا ادب واحترام کرنا ضروری ہے

छोटों से प्यार व महब्बत करना इन्सानियत है

چھوٹوں سے پیار و محبت کرنا انسانیت ہے

माँ–बाप की ख़िदमत करना फर्ज़ है

ماں باپ کی خدمت کرنا فرض ہے

उस्तादों का अदब करना और उनकी इताअ़त करना ज़रूरी है

استادوں کا ادب کرنا اور ان کی اطاعت کرنا ضروری ہے

इम्कान भर गरीबों की मदद करो

امکان بھر غریبوں کی مدد کرو

बद उन्वानी और ज़ुल्म से दूर रहो

بدعنوانی اور ظلم سے دور رہو

पड़ोसी से महब्बत रखो और जरूरत पर उस की मदद करो

پڑوسی سے محبت رکھو اور ضرورت پر اس کی مدد کرو

जिहालत दूर करो और इल्म आम करो

جہالت دور کرو اور علم عام کرو

यह सब इस्लामी अख़्लाक़ की बातें हैं

یہ سب اسلامی اخلاق کی باتیں ہیں